

साहित्यकार

चित्रावली





संस्करण, प्रथम, १९७२

प्रकाशक

स्वस्तिका प्रकाशन

२५६, चक

जीरो रोड

इलाहाबाद-३

मुद्रक व ब्लाक निर्माता

दि इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स प्रा० लि०

जीरो रोड

इलाहाबाद

यह चित्रावली



सन १९५८ में हमने अपनी सहयोगी संस्था राजकुमार प्रकाशन के प्रयास से 'हिन्दी लेखक चित्रावली' का प्रकाशन किया था। तब उस चित्रावली में केवल पच्चीस चित्र थे। प्रकाशन के थोड़े समय बाद ही चित्रावली का पूरा संस्करण समाप्त हो गया था और हिन्दी के प्रेमियों ने उस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

कुछ विशेष परिस्थितियों के कारण उस चित्रावली के पुनर्मुद्रण का अवसर न आया। लेकिन हिन्दी लेखकों की चित्रावली की माँग बराबर बनी रही। अतः अब हिन्दी के पैंतीस मूर्धन्य साहित्यकारों की यह चित्रावली प्रस्तुत कर के उस माँग की पूर्ति करते हुए हमें संतोष का अनुभव हो रहा है।

जिन साहित्यकारों के चित्रों का यह संकलन है उनके क्रम में आयु का ही ध्यान रखा गया है। हर चित्र के साथ साहित्यकार का संक्षिप्त जीवन परिचय भी दिया जा रहा है।

विश्वास है कि हिन्दी के पाठकों और शिक्षा-संस्थाओं को इस चित्रावली से पूरा लाभ उठाने का अवसर प्राप्त होगा और हमारा प्रयास सफल होगा।

प्रकाशन की वर्तमान मँहगाई को देखते हुए हमने चित्रावली का मूल्य भी कम ही रखने की कोशिश की है ताकि सर्वजन को आसानी से सुलभ हो सके।

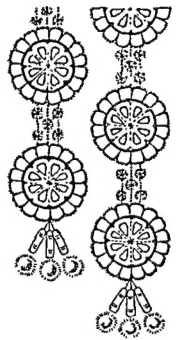
क्रम

- १-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- २-महावीरप्रसाद द्विवेदी
- ३-अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- ४-प्रेमचंद
- ५-पुरुषोत्तमदास टण्डन
- ६-रामचन्द्र शुक्ल
- ७-मंथिलीशरण गुप्त
- ८-जयशंकर प्रसाद
- ९-माखनलाल चतुर्वेदी
- १०-बृन्दावनलाल वर्मा
- ११-राधिकारमण प्रसाद सिंह
- १२-राहुल सांकृत्यायन
- १३-शिवपूजन सहाय
- १४-सियारामशरण गुप्त
- १५-सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- १६-सेठ गोविन्ददास
- १७-सुमित्रानंदन पंत
- १८-पाण्डेय वेचन शर्मा 'उग्र'
- १९-रामवृक्ष बेनीपुरी
- २०-इलाचन्द्र जोशी
- २१-लक्ष्मीनारायण मिश्र
- २२-भगवतीचरण वर्मा
- २३-सुमद्राकुमारी चौहान
- २४-यशपाल
- २५-जैनेन्द्र कुमार
- २६-रामकुमार वर्मा
- २७-नन्ददुलारे वाजपेयी
- २८-महादेवी वर्मा
- २९-हजारीप्रसाद द्विवेदी
- ३०-रामधारी सिंह 'दिनकर'
- ३१-उपेन्द्रनाथ अरक
- ३२-अज्ञेय
- ३३-अमृतलाल नागर
- ३४-रजनो धनिकर
- ३५-प्रोफ़ेसर शरद

साहित्यकार

चित्रावली





भारतेन्दु हरिश्चन्द्र



जन्म : सन १८५०

निधन : सन १८८५

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता एवं इतिहास-पुरुष । भारतीय नवोत्थान के प्रतीक, सर्वतोन्मुखी प्रतिभा-सम्पन्न, कर्मठ साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, इतिहास प्रसिद्ध सेठ श्रीचन्द के वंशज थे ।

६ सितंबर सन् १८५० को आप का काशी में जन्म हुआ । धनाढ्य परिवार में जन्म पा कर भी आपका जीवन एक विद्रोही के रूप में ही बीता ।

शिक्षा प्रारंभ में घर पर फिर बाद में बीस कालेज में हुई । बहुत छोटी आयु में ही पिता का देहान्त हो गया था, अतः पारिवारिक जिम्मेदारी कंधे पर आ पड़ी और शिक्षा का क्रम टूट गया ।

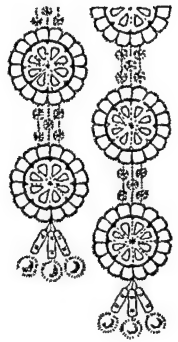
प्रारंभ से ही साहित्य के प्रति प्रगाढ़ रुचि थी । आप कुशाग्र बुद्धि और तीव्र स्मरणशक्ति वाले थे । स्वाध्याय द्वारा ही आप संस्कृत, गुजराती, मराठी, बंगला, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञाता बने ।

आठ वर्ष की आयु से ही काव्य रचना प्रारंभ कर दी । प्रथम तो शृंगार-रस की ओर अधिक झुकाव था । बाद में नाटक, गद्य के माध्यम से भारत की तत्कालीन स्थिति का निर्भोक्ता पूर्वक चित्रण किया । इसी कारण वे अंग्रेजी सरकार की आँखों में भी बराबर खटकते रहे ।

आप ने बंगला भाषा से अनेक ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद किया । काव्यग्रंथ, नाटक, उपन्यास और स्फुट रचनाओं की सख्या सौ के लगभग है । आप के प्रसिद्ध ग्रंथ हैं—उत्तरार्द्ध भक्तमाल, सतसई शृंगार, भारत दुर्दशा, सत्य हरिश्चन्द्र, मुद्राराक्षस, कर्पूर मंजरी, नीलदेवी, वैदिकी हिसा हिसा न भवति और भारत जननी आदि ।

आप को बहुत कम आयु मिली । ६ जनवरी सन् १८८५ को ३४ वर्ष चार महीने की अल्पायु में आप का देहान्त हो गया । इस अल्पायु में ही आप हिन्दी की नया जीवन दे गए । ●





महावीरप्रसाद द्विवेदी



जन्म : सन १८६४

निधन : सन १९३८

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी अधुनिक हिन्दी गद्य-साहित्य के युग-विधायक है। महान सम्पादक तथा खड़ी बोली गद्य को प्रतिष्ठा देने वाले आचार्य द्विवेदी युग-प्रवर्तक युग-गुरु थे।

उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दोलतपुर ग्राम में आप का सन १८६४ में एक भक्त-आह्वान परिवार में जन्म हुआ था।

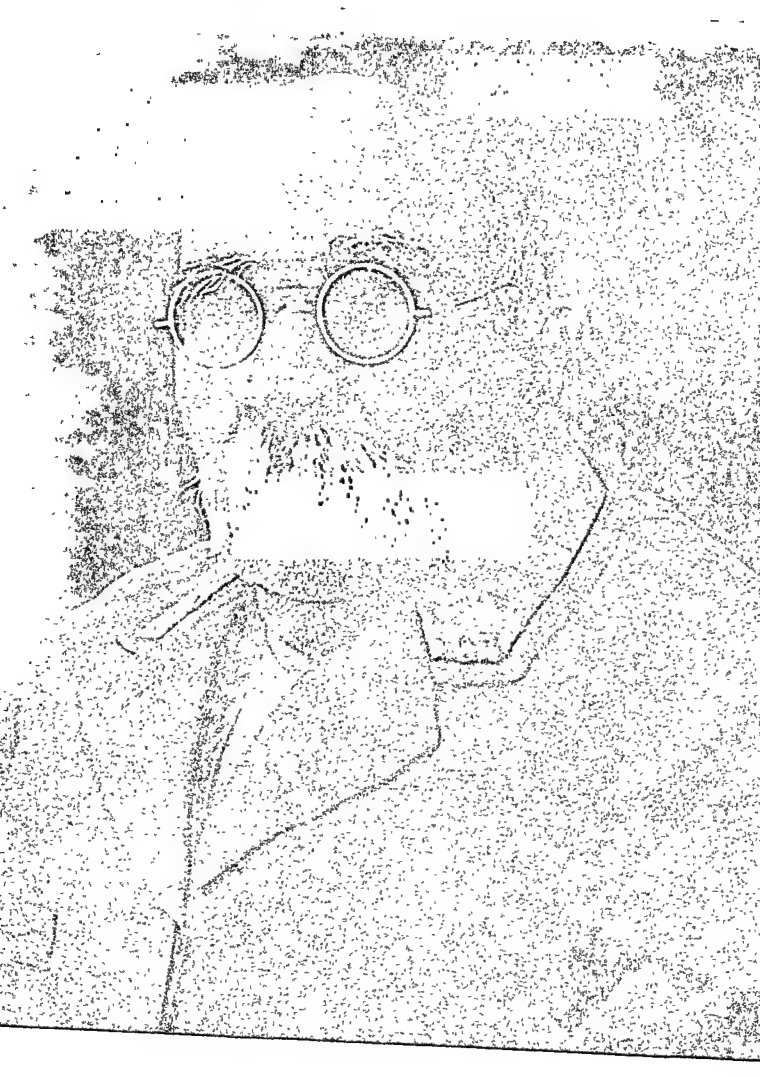
आप की प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई फिर राय-बरेली, उन्नाव, फतेहपुर और बंबई में। बड़ी छोटी उम्र में ही आप को जीविका के लिए रेलवे की नौकरी करना पड़ी। नागपुर, अजमेर, बंबई और भाँसी में नौकरी काल में रहे। फिर नौकरी से इस्तीफा देकर साहित्य-सेवा में लगे।

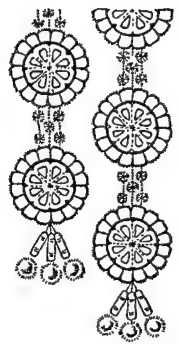
सन १९०३ में आपने 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन प्रारम्भ किया और सन १९२० तक 'सरस्वती' के माध्यम से हिन्दी के उत्थान के लिए सतत प्रयत्नशील रहे।

आप के ग्रंथों की संख्या अस्सी से अधिक ही है। आप के प्रसिद्ध ग्रंथों में विनय विनोद, स्नेह-माला, समाचार पत्र सम्पादक स्वतः, नागरी, सुमन, काव्य-मंजूषा, कविता-कलाप, प्राचीन पण्डित और कवि, तरुणोपदेश, नैपथ्यचरित चर्चा, वैज्ञानिक कोश, अतीत-स्मृति, नाट्यशास्त्र, साहित्यालाप, लेखांजलि, संकलन आदि अतिप्रसिद्ध हैं।

आचार्य द्विवेदी जी जीवन भर हिन्दी की कमियों को पूरा करने में प्रयत्नशील रहे और अपने अथक परिश्रम से हिन्दी गद्य को एक सशक्त रूप-रस दे सके। उन्होंने अपने सत्प्रयास से हिन्दी में अनेक लेखकों व कवियों को प्रोत्साहित कर के लेखन-कार्य को भी समाज में सम्मानित स्थान दिलाने में सफल रहे।

सन १९३८ में आप के निधन से साहित्य का आचार्य-पीठ अनिश्चित काल के लिए रिक्त हो गया। ●





खड़ी बोली को काव्य-भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने वाले हरिऔध जी का उल्लायक-व्यक्तित्व अत्यन्त प्रेरणास्पद था ।

आप का जन्म सन १८६४ में उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद कस्बे में हुआ था ।

शिक्षा का क्रम अधिक न चल सका । नामेल परीक्षा पास कर के आप ने निजामाबाद में अध्यापकी शुरू की, फिर वर्षों तक राजस्व विभाग में सदर कानूनगो के पद पर रहे । यहाँ से अवकाश ग्रहण करने पर पं० मदनमोहन मालवीय के आग्रह पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अवतनिक हिन्दी प्राध्यापक का कार्य किया ।

आप संस्कृत, फारसी और उर्दू के प्रकाण्ड पंडित थे ।

प्रारम्भ में आपने नाटक तथा उपन्यास लिखे परन्तु शीघ्र ही काव्य-सृजन की ओर आप की रुचि बढ़ी और बड़े वर्षों के सृजन के बाद ही आप को खड़ी बोली का प्रथम महाकवि होने का श्रेय मिला ।

आप की प्रमुख रचनाएँ हैं—रविमणी परिणय, ठेठ हिन्दी का ठाठ, अवलिला फूल, रसिक-रहस्य, प्रेम प्रपञ्च, प्रेम पुष्पहार, काव्योपवन, प्रियप्रवास, कर्मवीर, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे और वंदेही वनवास आदि ।

‘प्रियप्रवास’ को हिन्दो साहित्य का महाकाव्य माना गया है ।

सन १९२४ में आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए ।

सन १९४१ में छिहत्तर वर्ष की आयु में आप का देहान्त होने से हिन्दी साहित्य ने अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व और महाकवि खो दिया । ●

अयोध्यासिंह
उपाध्याय
‘हरिऔध’

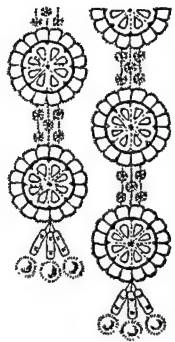


जन्म : सन १८६४

निधन : सन १९४१







कथा-सम्राट प्रेमचन्द का नाम आज भारत की सीमा को लाँघ कर विश्व भर में विख्यात हो गया है।

प्रेमचन्द उपनाम है और असली नाम धनपत राय।

हिन्दी कहानी को जनप्रिय बनाने का श्रेय प्रेमचन्द जी को ही है। प्रेमचन्द की कहानियों से हिन्दी कथा-साहित्य को समाज के मयार्थ चित्रण का नया मार्ग मिला और आज तक उसका प्रभाव ताजा है।

वनारस के निकट लमही ग्राम में ३१ जुलाई सन १८८० को जन्म लेकर प्रेमचन्द ने जीवन का अधिकांश भाग वनारस में ही बिताया। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई। फिर इंटर किया क्वींस कालेज, काशी से तथा प्राइवेट बी० ए० गोरखपुर से।

आप का बचपन बड़ी गरीबी और कष्ट में बीता। योंती आप ने सारा जीवन ही सधर्प करते हुए आर्थिक कष्टों में काटा, इसीलिए भारत की दुखी जनता का मन समझ सके और उनके दुख-दर्द का ही वे स्वाभाविकता से चित्रण करते रहे।

जमाना नामक उर्दू मासिक में सन १९०७ में आप की पहली कहानी छपी। प्रारंभ में आप उर्दू में ही लिखते थे। फिर १९१६ में हिन्दी में 'पंच परमेश्वर' छपी। बाद में आप पूरी तरह हिन्दी के हो गए और मर्यादा, जागरण और हंस आदि पत्रों का सम्पादन भी किया।

आप ने लगभग तीन सौ कहानियों और एक दर्जन उपन्यासों की रचना कर के हिन्दी कथा-साहित्य को बंभवशाली बनाया। आप के 'गोदान' उपन्यास की विश्व के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में गणना होती है।

आप के प्रमुख ग्रंथों के नाम हैं—गोदान, गबन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, सेवासदन, मानसरोवर और संश्राम आदि।

८ अक्टूबर १९३६ को आप के देहान्त से हिन्दी कथा-साहित्य का सूर्य डूब गया।

प्रेमचन्द हिन्दी-कथा-साहित्य की शान है। प्रेमचन्द कथा-सम्राट है। •

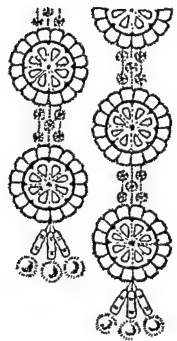
प्रेमचन्द



जन्म : सन १८८०

निधन : सन १९३६





पुरुषोत्तमदास टण्डन



जन्म : सन १८८२
निधन : सन १९६२

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद दिलाने के लिए आजीवन संघर्ष करने वाले श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन को 'राजपि' की सार्वजनिक उपाधि देकर भारत की जनता ने उनके अजेय व्यक्तित्व के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया था।

राजपि टण्डन जी उच्चकोटि के साहित्यिक और साहित्य के पारखी थे। वे काव्यप्रेमी और रसिक-हृदय व्यक्ति थे। प्रारम्भ में कविताएँ भी लिखी, पर बाद में लेखन से अधिक हिन्दी की सेवा व प्रतिष्ठा के लिए हिन्दी आन्दोलन की ओर बढ़े और शीघ्र ही उसके सर्वमान्य नेता बने।

प्रयाग में १ अगस्त १८८२ को एक सम्पन्न खत्री परिवार में जन्म लेकर आप ने सारा जीवन हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिए समर्पित कर दिया। आप की शिक्षा प्रयाग में ही हुई। आप उच्चकोटि के वकील थे। लेकिन जीवन के प्रारम्भ से ही राजनीति में रुचि लेते थे और बाद में देश के प्रथम श्रेणी के नेता बने। आप सन १९५०-५१ में कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे।

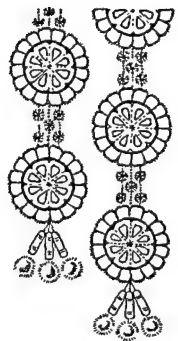
आप ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की जो आप की श्रमर कृति है। आप ने सन १९०६ में 'अभ्युदय' का सम्पादन किया। बाद में आप उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष भी रहे।

टण्डन जी के लेखों की संख्या कम नहीं है, पर वे पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे पड़े हैं। जब कभी उनका सकलन होगा तो हिन्दी साहित्य को एक निधि प्राप्त हो जायगी।

टण्डन जी को 'भारत रत्न' की सर्वोच्च उपाधि दे कर भारत सरकार ने उनको सम्मान किया।

टण्डन जी अपराजेय और आदर्श नैतिक व्यक्तित्व के धनी और त्यागी पुरुष थे।

१ जुलाई १९६२ को प्रयाग में आप का देहान्त हुआ और हिन्दी का ध्येष्ठतम योद्धा हमने खो दिया। ●



हिन्दी साहित्य को उसका प्रथम प्रामाणिक इतिहास देने वाले आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का साहित्य में अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान है।

शुक्ल जी का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुरंगी रहा है। साहित्य-इतिहासकार, शास्त्रीय वैज्ञानिक आलोचक, निबन्धकार, कवि, सम्पादक और अनुवादक। साहित्य की ऐसी कोई विधा नहीं जिस ओर शुक्ल जी की लेखनी न मुड़ी हो।

उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना ग्राम में एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में सन १८८४ में जन्म लेने वाले शुक्ल जी ने हिन्दी को जो मर्यादा दी, वंसा दूसरा उदाहरण नहीं।

आप की प्रारंभिक शिक्षा मिरजापुर में और फिर प्रयाग में हुई। आप इन्टर के आगे पढ़ न सके। लेकिन साहित्य के प्रति रूचि प्रारंभ से ही बहुत तीव्र थी। प्रारंभ में छोटी-मोटी सरकारी नौकरी और अध्यापकी के बाद आप सन १९०६-१० में नागरी प्रचारिणी सभा में 'हिन्दी शब्द सागर' के सम्पादक मण्डल में आ जुड़े। वहीं 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का भी सम्पादन किया। उसके बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी अध्यापक हुए और वहीं हिन्दी विभागाध्यक्ष भी हुए।

आप ने हिन्दी में शास्त्रीय वैज्ञानिक आलोचना की पद्धति प्रारंभ की। आप ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' रच कर हिन्दी को प्रथम प्रामाणिक इतिहास दिया जिसका महत्व आज तक सर्वमान्य है।

निबंधकार के रूप में भी आप का सर्वमान्य महत्वपूर्ण स्थान है। आप के ग्रंथों की संख्या कम नहीं, जिनमें प्रमुख हैं—हिन्दी साहित्य का इतिहास, गोस्वामी तुलसीदास, रस-मीमांसा, चिन्तामणि आदि। कई प्राचीन काव्य-ग्रंथों का सम्पादन कर के आप ने उनसे आधुनिक युग को परिचित कराया।

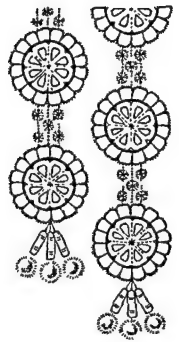
सन १९४० में शुक्ल जी के निधन से हिन्दी का गौरवशाली संरक्षक उठ गया। ●

रामचन्द्र शुक्ल



जन्म : सन १८८४
निधन : सन १९४०





भारतीय सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के उन्नायक कवि मैथिलीशरण गुप्त को 'राष्ट्रकवि' की उपाधि देकर भारतीय जन ने उनका आदर किया है।

राम-भक्त कवि, आधुनिक तुलसी, राष्ट्रकवि गुप्त जी ने 'साकेत' महाकाव्य की खड़ी बोली में रचना कर के राम-काव्य का मानस के बाद दूसरा कीर्तिमान स्थापित किया है।

उत्तर प्रदेश के भाँसी जिले के चिरगाँव स्थान में सन १८८६ में एक सम्पन्न वैश्य परिवार में जन्म लेकर गुप्त जी ने सारा जीवन साहित्य साधना में ही लगाया।

आप ने किशोरावस्था से ही लिखना प्रारंभ किया और आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आकर पूर्णरूप से अपने काव्य-व्यक्तित्व को विकास दे सके।

आप ने पचास से अधिक ग्रंथों की रचना की जिनमें जयद्रथ वध, भारत-भारती, किसान, पंचवटी, गुरुकुल, साकेत, यशोधरा, द्वापर, सिद्धराज, पृथ्वीपुत्र, जयभारत, विष्णुप्रिया, लीला, मेघनाथ वध और रत्नावली आदि प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

अपनी साठ वर्ष की साहित्य-सेवा से गुप्त जी ने हिन्दी को गौरव, प्रतिष्ठा और अमरता दी है।

गुप्त जी राम-भक्त थे। राम ही उनके जीवनाधार थे। राम ही उनके काव्य के प्रेरणा-स्रोत थे। राम के प्रति अपनी भक्ति भावना, राष्ट्र के प्रति प्रेम और साहित्य के प्रति सर्वस्व अर्पण की लालसा ही उनकी खूबी थी।

गुप्त जी को हिन्दी के प्रतिनिधि के रूप में भारतीय संसद की सदस्यता देकर भारत सरकार ने आपका सम्मान किया। गुप्तजी की राष्ट्रीय व साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें सरकार ने 'पद्म-विभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया था।

दिसंबर सन १९६४ में गुप्त जी ७८ वर्ष की आयु में गोलोक यासी हुए। •

मैथिलीशरण गुप्त



जन्म : सन १८८६

निधन : सन १९६४



गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में समान रूप से महान कृतियों की रचना करने के कारण हिन्दी के महाकवि जयशंकर 'प्रसाद' के यश का हिन्दी साहित्य में सदा डका वज्रता रहेगा।

प्रसाद जी की अमर काव्य-कृति 'कामायनी' को आधुनिक युग का महाकाव्य माना गया है। प्रसाद जी के काव्य से जहाँ हिन्दी में नवयुग का प्रारंभ होता है वहीं उनका रचित गद्य और विशेषकर कहानियों व नाटकों ने भी असाधारण शिखर-स्थान प्राप्त किया है।

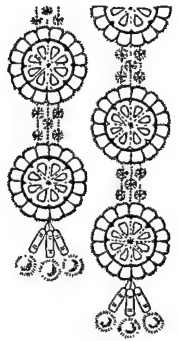
काशी के 'सुँघनीसाहु' नामक प्रसिद्ध वैश्य धराने में सन १८८६ में जन्म लेकर प्रसाद जी जीवन पर्यंत काशी की साहित्यिक परम्परा के प्रतीक बनकर रहे। आप की शिक्षा बर्नोस कालेज, वाराणसी में हुई, पर स्वाध्याय से ही आप ने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी का गहन अध्ययन किया। पुरातत्व, दर्शन, पुराण, भारतीय संस्कृति, वैदिक साहित्य और इतिहास में आपको विशेष रुचि थी।

आप की गद्य-पद्य रचनाओं की संख्या काफी है। कामायनी, लहर, आँसू, चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त, तितली, कंकाल, आकाशदीप, छाया आदि आपके लोकप्रिय और प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

मूलरूप से प्रकृति के कवि होने के कारण प्रसाद जी के गद्य पर भी उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है।

प्रसाद जी भारतीय संस्कृति और सम्यता के महान हिमायती थे।

मात्र अड़तालिस वर्ष की आयु पायी आपने और सन १९३७ में आप के निधन से हिन्दी साहित्य का गरिमामय व्यक्तित्व खो गया। •



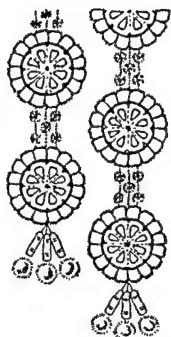
जयशंकर 'प्रसाद'



जन्म : सन १८८६

निधन : सन १९३७





द्विवेदी-युग की दुपहरी और सौभ, छायावाद का उदय और अवसान तथा प्रगतिवाद का संवेरा-हिन्दी के तीन युगों को अपनी चमत्कारी लेखनी से नापने वाले कविवर पं० माखनलाल चतुर्वेदी मुख्य रूप से राष्ट्रीय कवि, प्रवर सम्पादक और निर्भीक वक्ता थे।

आप का जन्म सन १८८६ में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बावई ग्राम में हुआ था। आप की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। जीवन की तरुणार्ध में ही आप क्रान्तिकारी दल में शामिल हो गए। आगे चल कर आप गांधीवाद के सबल समर्थक और मध्यप्रदेश के राजनेता सिद्ध हुए। अनेक बार राष्ट्रीय आन्दोलनों में जेल भी गए।

आप का साहित्यिक जीवन एक अोजस्वी राष्ट्रीय कवि के रूप में प्रारंभ हुआ। आपने बहुत सी रचनाएँ 'एक भारतीय आत्मा' उपनाम से भी लिखी। आप स्व० गणेशशंकर विद्यार्थी से बहुत प्रभावित थे। आप ने 'प्रभा' और 'कर्मवीर' का अनेक वर्षों तक सम्पादन भी किया।

नए लेखकों व कवियों को सीमाहीन प्रोत्साहन और प्रेरणा देना आप की विशेषता थी। आज के कितने ही प्रसिद्ध कवियों व लेखकों के आप काव्य-गुरू और प्रेरणा-स्रोत रहे हैं।

भारत सरकार ने आप को 'पद्मभूषण' की उपाधि से भूषित किया।

आप की प्रमुख रचनाएँ हैं-हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, युग चरण, समर्पण, माता, साहित्य देवता आदि।

आप जैसा अोजस्वी भाषणकर्ता दूसरा नहीं। आप की वाणी फौलाद उगलती थी, क्रान्ति की सृष्टि करती थी।

३० जनवरी सन १९६८ को आप का देहान्त हो गया। ●

माखनलाल
चतुर्वेदी



जन्म : सन १८८६
निधन : सन १९६८





हिन्दी के एकमात्र और सिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में श्री वृन्दावनलाल वर्मा का अपना अद्वितीय और महान् व्यक्तित्व रहा है।

झाँसी जिले के प्रसिद्ध मकरानीपुर कस्बे के एक सम्पन्न परिवार में सन १८८६ में आप का जन्म हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा सलितपुर में फिर ग्वालियर में हुई और वकालत आप ने आगरा विश्वविद्यालय से पास की।

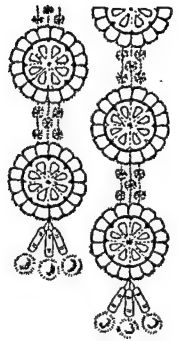
झाँसी के निवासी और सफल कानून पंडित, वकील और अपने व्यस्त पेशे से समय निकाल कर आप जीवन भर साहित्य सेवा करते रहे।

लगभग दो दर्जन बड़े उपन्यासों, इतने ही नाटकों और पचासों कहानियों के रूप में आप का मौलिक साहित्य लगभग पन्द्रह हजार पृष्ठों का है।

अपने बाल्यकाल में जब आप नवी कक्षा के छात्र थे तभी से लिखना प्रारंभ किया और सन १९०६ में प्रथम कृति 'सेनापति ऊदल' नामक नाटक के प्रकाशन के बाद ही सरकार ने उसे जप्त कर लिया था। अपनी रचनाओं द्वारा आपने भारत के गौरवमय अतीत को पुनश्चजीवित करने का प्रयास किया है। इतिहास को विना तनिक भी तोड़े, साहित्य में इतिहास का सत्य और साहित्य का आनन्द दोनों की समान रूप से रक्षा करना आप की सफल लेखनी की ही सामर्थ्य है।

आप के सभी उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं। झाँसी की रानी, मृगनयनी, गढ़कुंडार, कचनार, विराटा की पत्नि आदि उपन्यासों की तुलना विश्व के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासों से की जा सकती है।

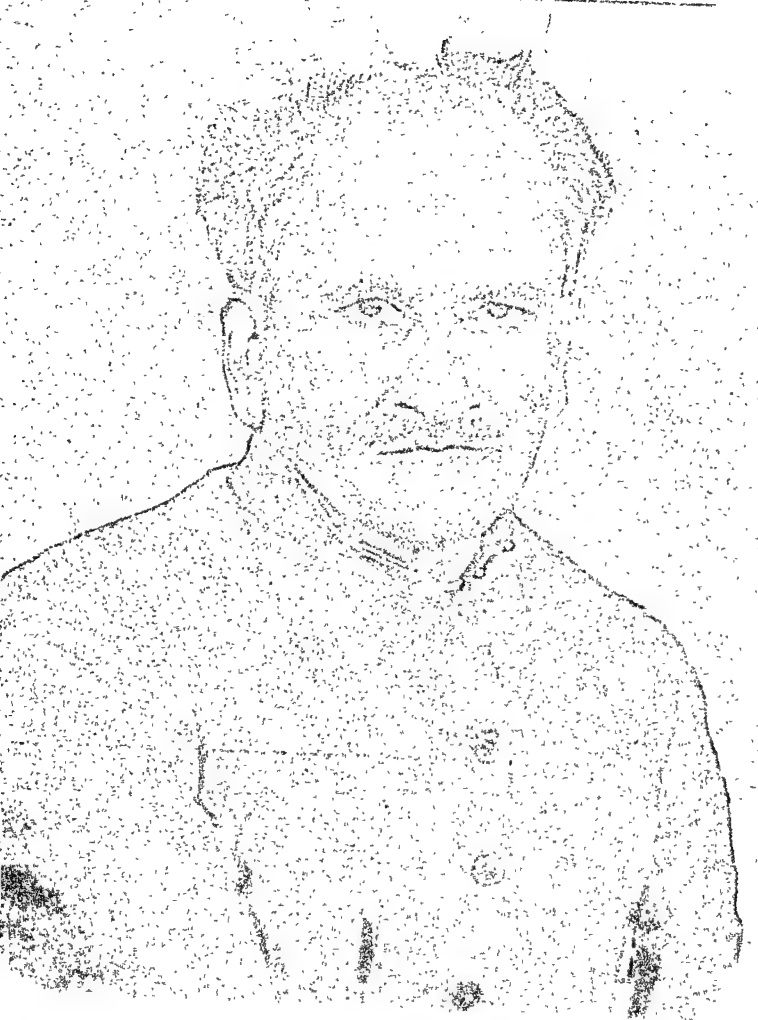
२३ फरवरी १९६६ को आप का देहान्त हुआ। लगभग पैंसठ वर्षों तक लगातार लेखन कार्य में रत अस्सी वर्षीय वर्मा जी जीवन के अन्त तक थके नहीं थे और उनमें युवकों जैसा साहित्यिक उत्साह बना रहा। •



वृन्दावनलाल वर्मा



जन्म : सन १८८६
निधन : सन १९६६



हिन्दी के वयोवृद्ध लेखकों में राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह का उनकी अद्भुत और ओजस्वी लेखनी के कारण बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

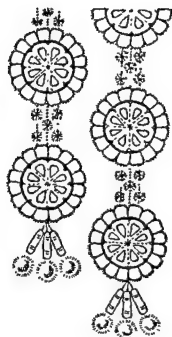
आप का जन्म सन १८६१ में सूर्यपुरा (आरा, बिहार) के राजवंश में हुआ था। आप की शिक्षा, सूर्यपुरा, आरा, पटना, कलकत्ता, आगरा और इलाहाबाद में हुई। सन १९१३ में आप की पहली कहानी 'कानो में कंगना' हिन्दी में छपी। यह अपने ढंग की अनूठी कहानी है।

राजा साहब को उर्दू की चाशनी से पनी सजीव भाषा और अपने ढंग की अनूठा शैली से सारा हिन्दी ससार मुग्ध था। आज तक आप की शैली की नकल भी कोई नहीं कर सका। अनूठी शैली के कारण आप को हिन्दी का गद्य-कवि की कहा जाता है।

आपने मुख्यतया नाटक, सस्मरण, कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं। आप के सस्मरण भी हिन्दी में अपने तर्ज के बिल्कुल अनूठे और निराले हैं। 'जानी-मुनी-देखी' पुस्तकमाला के नाम से आपने एक दर्जन उपन्यास-नुमा लम्बे सस्मरण लिखे हैं जो विश्व-साहित्य में भी अपनी नवीनता के लिए अलग स्थान पावेंगे। 'राम रहीम' नामक आपके वृहत् उपन्यास ने प्रकाशन के बाद तहलका मचाया था।

पूरी अर्द्धशताब्दी से अधिक समय तक साहित्य-सेवा में रत रहने पर भी राजा साहब जीवन के अन्त तक थके नहीं थे। सन १९७१ में ८१ वर्ष की आयु में आप का देहान्त पटना में हुआ।

मात्र शैली की विशेषता के कारण साहित्य में अनूठा स्थान बना कर सदा अमर रहने वाले राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह जैसा दूसरा उदाहरण नहीं है। ●



राधिकारमण
प्रसाद सिंह



जन्म : सन १८६१
निधन : सन १९७१





हिन्दी में राहुल सांकृत्यायन जैसा विद्वान, धुमकड़ तथा 'महा-पंडित' की उपाधि से स्मरण किया जाने वाला दूसरा नाम न मिलेगा।

आप का जन्म सन १८६३ में भाजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) के पंदहा ग्राम में एक कुलीन ब्राह्मण-परिवार में हुआ था।

आप को नियमित शिक्षा का भवसर प्राप्त न हो सका पर स्वाध्याय से आप ने भारतीय संस्कृति, इतिहास, संस्कृत, वेद, दर्शन और विश्व की अनेक भाषाओं में पांडित्य प्राप्त किया।

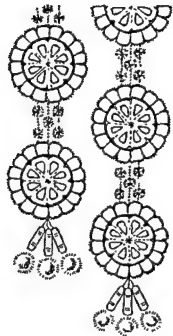
राहुल सांकृत्यायन तो उनका अपना दिया नाम था। असली नाम था—केदारनाथ पाण्डेय। कुछ वर्षों तक वे रामोदर स्वामी के नाम से भी जाने जाते थे।

बाल्यकाल से ही भ्रमण के लिए निकले राहुल जी जीवन भर कहीं एक स्थान में जम कर रह न सके। स्वदेश ही नहीं, विदेशों में जैसे नेपाल, तिब्बत, लंका, रूस, इंग्लैंड, योरप, जापान, कोरिया, मंचूरिया, ईरान और चीन में ये कितना घूमे, इसका ठीक हिसाब नहीं लगाया जा सकता। ये सभी साहित्यिक-यात्राएँ थी।

साहित्यिक जीवन सन १८२६ में शुरू हुआ। आप के रचे ग्रंथों की संख्या १५० के उपर है तथा सभी की कुल पृष्ठ संख्या एक लाख से अधिक ही है। राहुल जी के मौलिक तथा अनूदित ग्रंथों में उपन्यास, कोश, राजनीति, जीवनी, दर्शन, भ्रमण, धर्म, नाटक, विज्ञान, इतिहास और संस्कृति आदि विषय हैं।

सन १९१३ में लम्बी बीमारी के बाद दिल्ली में आप का देहान्त हुआ।

हिन्दी इतिहास में राहुल जी जैसा विद्वान और कर्मठ व्यक्ति दूसरा होना असंभव है। ●



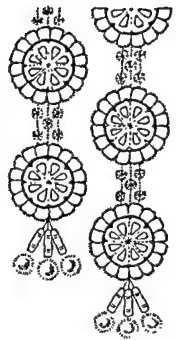
राहुल सांकृत्यायन



जन्म : सन १८६३

निधन : सन १९१३





प्रेमचन्द्र और प्रसाद के समकालीन लेखकों व सम्पादकों में आचार्य शिवपूजन सहाय का अन्यतम स्थान है।

आरा (बिहार) के एक गाँव में आप का सन १८६३ में जन्म हुआ था। आप का मुख्य कार्य-क्षेत्र पटना ही रहा।

आप की सेवाएँ हिन्दी-पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय तथा अविस्मरणीय हैं। भारवाड़ी सुधार, मतवाला, आदर्श, उपन्यास तरंग, समन्वय, माधुरी, गंगा, जागरण, बालक और साहित्य नामक पत्रिकाओं के सफल सम्पादक के अलावा आपने 'द्विवेदी अभिनन्दन ग्रंथ' तथा 'राजेन्द्र अभिनन्दन ग्रंथ' जैसे विशाल ग्रंथों का भी सम्पादन किया।

आप ने कहानियाँ और उपन्यास भी लिखे हैं। 'दो घड़ी' और 'विभूति' नामक दो कहानी-संग्रह तथा 'देहाती-दुनिया' नामक प्रथम आँवलिक उपन्यास आप के प्रसिद्ध हैं। आप की समस्त रचनाएँ चार खण्डों में 'शिवपूजन रचनावली' के नाम से बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित हुई हैं।

आचार्य शिवपूजन सहाय का समस्त जीवन मात्र साहित्य सेवा में ही बीता। बिहार साहित्य सम्मेलन और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् नामक हिन्दी की दो विशाल व सम्मानित संस्थाएँ आप के कीर्ति-कर्म के आदर्श उदाहरण हैं।

सन १९६३ में आप का पटना में देहान्त हुआ।

हिन्दी के लिए शिवपूजन जी का त्यागभय जीवन एक उदाहरण है और आपका व्यक्तिगत जीवन तप व साधना तथा सादगी का एक आदर्श नमूना है। ●

शिवपूजन सहाय



जन्म : सन १८६३

निधन : सन १९६३



राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के मनुज सियारामशरण गुप्त बहु मुखी प्रतिभा के साधुमना, सरल कलाकार थे ।

आप का जन्म सन १८६५ में चिरगाँव (भोजी) में हुआ था । आपने अपना समस्त जीवन अपने अग्रज—मैथिलीशरण गुप्त के सहयोग में लक्ष्मण की भाँति काटा और कभी प्रसिद्धि व सम्मान के प्रति लालायित नहीं हुए ।

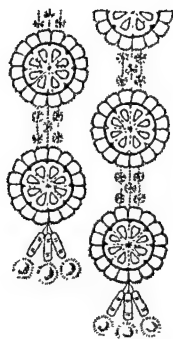
मूलरूप से आप एक कवि ही थे पर सरल व मार्मिक गद्य लिखने में भी आपको कोई पा नहीं सकता । कवि, कथाकार, निबंधकार के रूप में आपका हिन्दी में विशिष्ट स्थान है । आप के जीवन की सरलता और विनयशीलता आप के साहित्य में भी पूर्ण रूप से परिलक्षित होती है । आप की लेखन-शैली पर गाँधी-दर्शन का पूरा प्रभाव है ।

आप की लगभग पच्चीस काव्य-कृतियाँ, तीन उपन्यास, एक कहानी संग्रह प्रकाशित और प्रचलित हैं । कथा आप को रचनाओं में विशेष रूप से प्लावित है । आप के निबंध भी कम रोचक नहीं हैं । आपने नाटक भी लिखे हैं ।

आप के प्रमुख ग्रंथों के नाम हैं—मौर्यविजय, आर्द्रा, पाषेय, आत्मोत्सर्ग, मुष्मती, बापू, उन्मुक्त, नकुल, गोद, नारी, मानुषी और झूठ-सच आदि ।

सन १९६३ में आपका देहान्त हुआ ।

प्रचार और चर्चा से दूर, समस्त जीवन एकाग्रचित्त साहित्य साधना में रत रहने वाले सियारामशरण गुप्त का सदा आदर से स्मरण किया जाएगा । ●



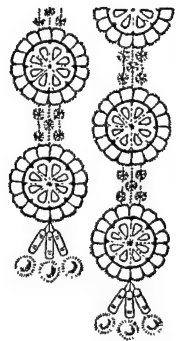
सियारामशरण
गुप्त



जन्म : सन १८६५

निधन : सन १९६३





सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'



जन्म : सन १८८६

निधन : सन १९६१

'निराला' उपनाम से हिन्दी साहित्य में युगान्तरकारी रचना करने वाले श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी इस शताब्दी के सबसे अधिक प्रेरणादायक युगप्रवर्तक महाकवि व साहित्यकार हैं।

साहित्य की प्रचलित विधाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने वाले, नवीन शैली के विधायक निराला जी का व्यक्तित्व भी अतिशय विद्रोही और क्रान्तिकारी तत्वों से निर्मित हुआ था।

जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश) के निवासी पर जन्म हुआ सन १८८६ में बंगाल के महिषादल राज में और प्रारंभिक जीवन में बंगाली मातृभाषा थी। हिन्दी के प्रति अनुराग और हिन्दी की विद्वता बाद में आपने स्वतः अर्जित की।

सन १९१६ के लगभग आप की रचनाएँ प्रकाश में आने लगी थीं। आप की रचनाओं में एक विशेष तीखापन है जो उनके विद्रोही मन की सदा याद दिलाता रहता है।

समन्वय, मतवाला, रंगीला, मुधा आदि पत्रों का आपने सम्पादन तथा विवेकानन्द, यकिमचन्द्र चटर्जी की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद भी किया।

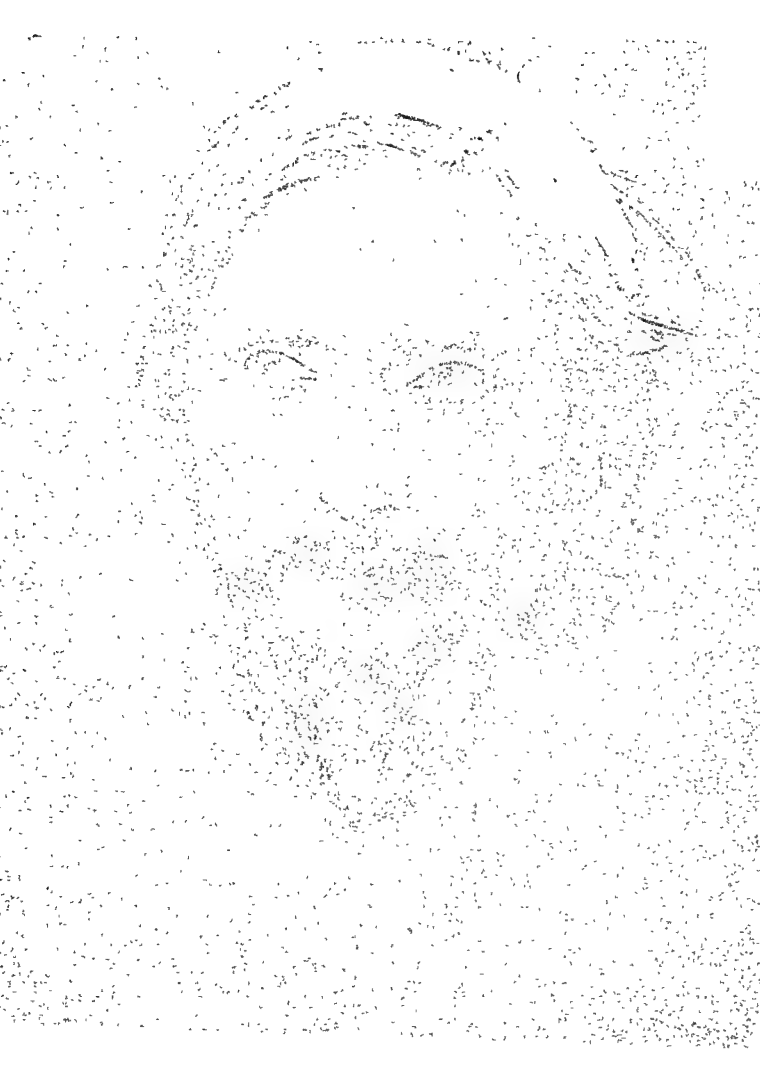
आप की काव्य-कृतियों से हिन्दी की काव्य-धारा को नई दिशा मिली। हिन्दी काव्य को छंदमुक्त करने का श्रेय आप को ही है। काव्य के छलावा आपने उपन्यास, कहानी, निबंध आलोचना और संस्मरण भी लिखे हैं।

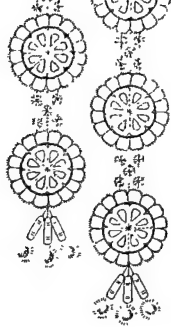
आप की प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं—परिमल, तुलसीदास, राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता और गद्य कृतियाँ हैं—छलका, निरुपमा, कुत्लीभाट, बिल्लियुर बकरिहा, प्रबंध प्रतिमा आदि।

सम्बन्धी मानसिक व शारीरिक शिथिलता के बाद जब सन १९६१ में आप का देहान्त हुआ तब हिन्दी का एक संघर्ष-युग से समाप्त हो गया।

निराला का जीवन संघर्षों का एक इतिहास है। जीवन में एक दिन भी चैन न पाने वाले ऐसे संघर्षरत महाकवि की जीवन-कथा भी एक कारण महाकाव्य है। •







वयोवृद्ध राष्ट्रीय नेता, हिन्दी आन्दोलन के प्रमुख सेनानी, प्रसिद्ध नाटककार, विद्वान सेठ गोविन्ददास का हिन्दी-जगत में बड़ा सम्माननीय स्थान है।

सन १८६६ में जबलपुर के अत्यन्त सम्पन्न व वैभवशाली परिवार में आप का जन्म हुआ। आप की शिक्षा योग्य शिक्षकों की देख रेख में घर पर ही हुई। आप ने हिन्दी के अलावा अंग्रेजी और संस्कृत का गहन अध्ययन किया।

साहित्य रचना के प्रति प्रारंभ से ही रुचि रही। बारह वर्ष की अवस्था में ही 'चम्पावती' नामक एक तिलस्मी उपन्यास की रचना की। बाद में नाटक-रचना की ओर बड़े और अधिक तक छोटे-बड़े लगभग एक सौ नाटकों की रचना की। 'इन्दुमती' नामक हजार पृष्ठों का एक बृहदाकार उपन्यास भी आपने लिखा जिसमें भारत की राजनीतिक व सामाजिक हलचलों का विस्तृत वर्णन हुआ है। आपने यात्राएँ खूब की हैं और यात्रा-वृत्तान्त तथा संस्मरण और आत्मकथा भी लिखा है। लेकिन हिन्दी साहित्य में आप की विशेष प्रतिष्ठा एक सफल नाटककार के रूप में ही है।

आप के प्रसिद्ध नाटकों के नाम हैं—कर्तव्य, कुलीनता, हर्ष, शशिगुप्त, शेरशाह, अशोक, विश्वासघात, सिंहलद्वीप, पाकिस्तान, सेवापथ, संतोष कहाँ, विकास आदि।

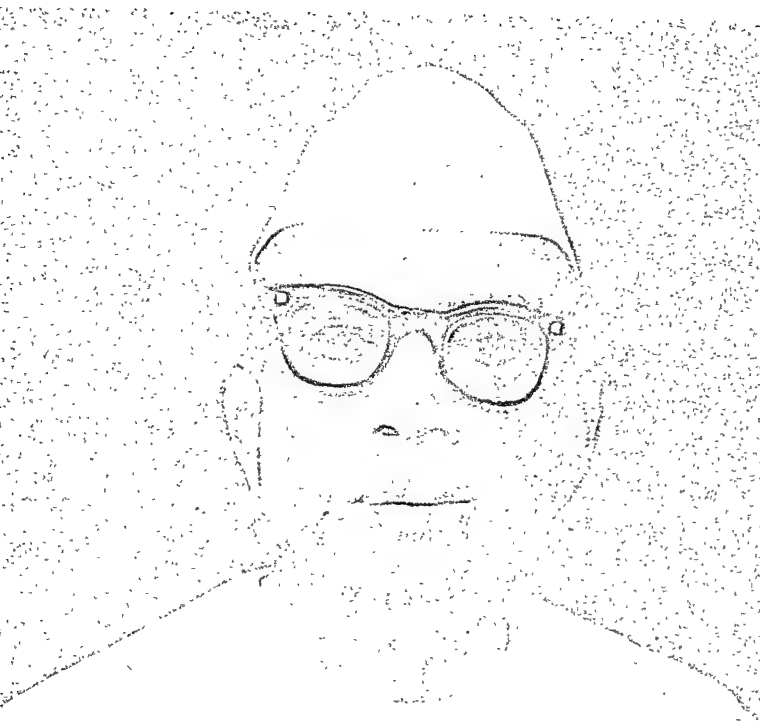
आप ने जीवन का अधिकांश भाग राष्ट्र-सेवा में लगाया। १९३० में सर्वप्रथम बार जेल गए, बाद में कई बार जेलयात्रा की। आप प्रारंभ से ही भारतीय संसद के निर्वाचित सदस्य हैं। संसद द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत कराने में आप का योगदान और संपर्क निरस्मरणीय है।

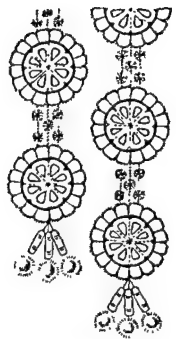
भारत सरकार ने आप की राष्ट्रीय एवं साहित्यिक सेवाओं के लिए आप को 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत कर के सम्मान प्रदर्शित किया है।

सेठ गोविन्ददास



जन्म : सन १८६६





आधुनिक युग में साहित्य-जगत के सबसे आकर्षक व्यक्तित्व बापे महाकवि सुमित्रानन्दन पंत छायावाद के आधार-स्तंभ माने जाते हैं।

व्यक्तित्व में आकर्षक प्रकृति के मुकुमार कवि और काव्य के अग्र्यतम शिल्पी पंत जी आज हिन्दी के गौरव बन गए हैं।

आप का जन्म सन १९०० में कुमाँचल प्रदेश के कोसानी ग्राम में हुआ था। आप का बचपन प्रकृति के सुहावने वातावरण में बीता। आप की शिक्षा अल्मोड़ा और प्रयाग में हुई। आप ने असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर पढाई छोड़ी और राजनीति के प्रति अत्यन्त जागरूक रह कर भी अपनी कोमल प्रकृति व सरल स्वभाव के कारण राजनीति में सक्रिय भाग न ले सके।

आप पर गांधी जी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और योगिराज अरविद का बहुत प्रभाव रहा है। आप ने हिन्दी के अलावा अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला भाषा का गहन अध्ययन किया है। आप छायावाद और प्रगतिवाद के अग्रदूत माने जाते हैं।

आप के प्रसिद्ध काव्यग्रंथों की संख्या पच्चीस से अधिक है और उनमें प्रमुख हैं—वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगांत, युगवाणी, स्वर्णधूलि, स्वर्णकिरण, उत्तरा, रजतशिवर, अतिमा, मोवर्ण, ज्योत्सना, ग्रंथि, लोकायनन, शवध्वनि आदि।

आप के काव्य व्यक्तित्व की गरिमा के सम्मान में भारत सरकार ने आप को 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया है।

पंत जी अत्यन्त मुकुमार, मरल-हृदय, प्रकृति के कोमल कवि, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी और भारतीय नवचेतना के अग्रदूत हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व को पा कर हिन्दी साहित्य अमर हुआ है। पंत जी हिन्दी की गरिमा के प्रतीक-रूप हैं। ●

सुमित्रानन्दन पंत



जन्म : सन १९००



उग्र जी हिन्दी साहित्य में अोजपूर्ण व्यक्तित्व, निर्भीकता और स्पष्टवादिता के प्रतीक-मुरूप रहे हैं।

‘उग्र’ नाम हिन्दी कथा-साहित्य में एक विशेष व आकर्षक शैली के ‘ट्रेडमार्क’ की तरह लिया जायगा।

‘उग्र’ उपनाम था, असली नाम था-पाण्डेय वेचन शर्मा। ‘उग्र’ उपनाम उनके स्वभाव की उग्रता का प्रतीक था।

उत्तर प्रदेश के चुनार शहर में सन १९०० में जन्म। प्रारंभिक शिक्षा काशी में। प्रारंभ से ही आप अद्वितीय प्रतिभा के मालिक थे। विद्यार्थी जीवन में ही नाटक-मंडलियों के निकट सम्पर्क में रह कर जीवन की विविधता का अनुभव पाया। अस्वस्थयोग के दिनों में पढाई को सदा के लिए त्याग कर साहित्य-सेवा में लग गए। किशोरावस्था में ही आप के उत्कृष्ट एवं उद्भट विचारों से भरे लेख पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगे तभी लोगों ने आप की विराट प्रतिभा के दर्शन पा लिए थे। आप के लेखों ने प्रारंभ से ही तहलका मचाना शुरू किया था।

उग्र जी काफी समय तक ‘मतवाला’ के सम्पादकीय विभाग से जुड़े रहे। एक बार बंबई के सिने-जगत में भी भाँक आए थे।

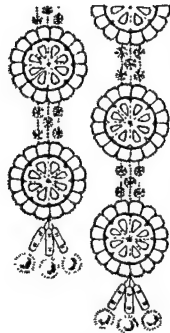
आप की पहली रचना १९२२ में प्रकाश में आई। आपने उपन्यास, कहानियाँ, नाटक एवं प्रहसन की रचना की। बुधुभा की बेटी, अछूत, चाकलेट आदि आप के प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

उग्र जी की कहानियाँ हिन्दी कथा-साहित्य में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

निर्भीक यथार्थवादी होने के कारण सामाजिक बुराईयों का यथावत चित्रण करने में आप कभी नहीं हिचके। आप की रचनाओं में आप की निर्विन्द मस्ती झलकती है। समाज और धर्म में फैले पाखण्ड तथा राजनैतिक अन्याय पर निर्मम प्रहार करने का जो अपूर्व साहस आप में था, वैसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं।

हिन्दी कथा-साहित्य में अपनी लासानी शैली के कारण आप का अमर व अद्वितीय स्थान है।

सन १९६६ में आप के निधन से हिन्दी-जगत का दिव्य व्यक्तित्व तथा वैतालिक सदा के लिए खो गया। ●



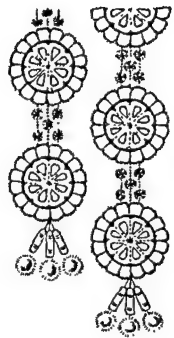
पाण्डेय वेचन शर्मा
‘उग्र’



जन्म : सन १९००

निधन : सन १९६६





हिन्दी-जगत के मस्त-मोला, अदभ्य उत्साही, विर-जवान और कर्मठ व्यक्तित्व वाले बेनीपुरी जी का अपना एक युग था, उनका अपना एक अलग रंग था।

उत्तर बिहार के बेनीपुर ग्राम (मुजफ्फरपुर) में सन १९०९ में एक किसान परिवार में जन्म लेकर अधिक शिक्षा न पा सके और समस्त जीवन देश-सेवा तथा साहित्य-सेवा में ही लगाया।

राजनीति में पूरी तरह डूबे रहने के कारण आपकी रचनाओं में राजनीतिक चेतना को प्रमुखता मिली है। आप की रचनाओं में भारत का गाँव और ग्रामीण समाज अमरता पा गया है।

आप ने शब्दचित्र, रेखाचित्र, संस्मरण, नाटक, उपन्यास और कहानियाँ लिखी हैं। अपनी विशिष्ट शैली के कारण आप की भाषा में एक विचित्र मजीबता और अदभुत आकर्षण मिलता है।

राष्ट्रीय आन्दोलनों से जुड़ कर आप ने लगभग दस वर्ष जेल में काटे। आप भारत में समाजवादी आन्दोलन के उन्नायक तथा स्थापकों में से थे।

आप कुशल सम्पादक भी थे। बालक, युवक, योगी, हिमालय, बुलू-मुलू और नई धारा के सम्पादन में आपने अभूत यश अर्जित किया।

लालतारा, गेहूँ और गुलाब, चिता के फूल, अम्बपाली, माटी की मूरतें, विजेता, पैरों में ऐंख बाँधकर आदि आप की अमर कृतियाँ हैं। आप की रचनाओं का संकलन भी 'बेनीपुरी ग्रंथावली' के रूप में प्रकाशित हुआ है।

आप ने दो बार विदेश यात्रा भी की।

सन १९६८ में लम्बी बीमारी के बाद आप का देहान्त हुआ।

बेनीपुरी हिन्दी की मस्ती के प्रतीक थे। •

रामवृक्ष बेनीपुरी



जन्म : सन १९०९

निधन : सन १९६८

1

2000

2

3

4

5

6



हिन्दी के मनोवैज्ञानिक कथाकारों में श्री इलाचन्द्र जोशी का सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

आप का जन्म सन १९०२ में अल्मोड़ा के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। अल्मोड़ा में ही आप की प्रारंभिक शिक्षा हुई। नियमित शिक्षा अधिक न चल सकी। यों आप हिन्दी, संस्कृत और बंगला के अच्छे विद्वान हैं। अंग्रेजी के ब्रलावा फॉच और जर्मन आदि विदेशी भाषाओं का भी आप ने अच्छा अध्ययन किया है।

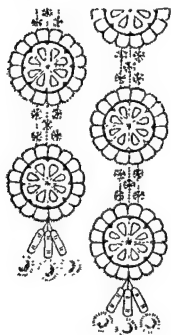
जोशी जी ने अपना साहित्यिक जीवन एक कुशल कवि के रूप में प्रारंभ किया था, लेकिन आगे चलकर आप की समस्त काव्य-प्रतिभा आप के गद्य-साहित्य में ही केन्द्रीभूत हो गई। इसीलिए आप के गद्य को पढ़ते समय काव्य के समस्त रसों का रसास्वादन हो जाता है।

गद्य-रचना में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आप का प्रिय और प्रमुख विषय रहा है। मानव जीवन के साधारण और असाधारण मनोविज्ञान और उसके प्रभाव का चित्रण आप की अपनी विशेषता है।

विदेशी साहित्य के गहन-अध्ययन के कारण आपकी शैली हिन्दी के अन्य लेखकों से सर्वथा भिन्न, सदा अलग दिखाई पड़ती है।

जोशी जी ने मुख्यरूप से कहानियाँ और उपन्यासों की रचना की है। आप आज के युग के श्रेष्ठतम उपन्यासकारों में गिने जाते हैं। निर्वासित, पर्दे की रानी, प्रेत और छाया, मुक्ति पथ, श्रतुचक्र आदि आप के विख्यात उपन्यास हैं।

स्वभाव से गंभीर तथा व्यक्तित्व से चिर-युवा जोशी जी वृद्धावस्था में भी साहित्य में एक नए प्रागन्तुक की तरह ही नवीनता के प्रति चिर-उत्सुक बने रहते हैं। यही शायद उनकी चिर-नवीनता की कुंजी है। ●

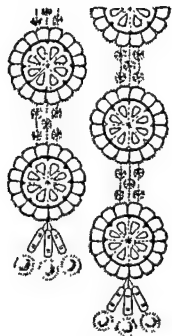


इलाचन्द्र जोशी



जन्म : सन १९०२





हिन्दी नाटक-साहित्य के भंडार को अनेक प्रसिद्ध कृतियों ने सजाने वाले वं० लक्ष्मीनारायण मिश्र का आधुनिक नाटककारों में प्रमुख स्थान है।

सन १९०३ में आजमगढ़ जिले (उ० प्र०) के वस्ती नामक ग्राम में आप का जन्म हुआ।

आप की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई तथा बाद में आप ने सेन्ट्रल हिन्दू कालेज, काशी से बी० ए० पान किया।

काशी में रहते हुए आप को काशी के साहित्यिक वातावरण में घुल-मिल जाने का पूरा अवसर मिला और तभी आप को साहित्य से अभिरुचि भी हुई। अठारह वर्ष की आयु से ही आप साहित्य-सृजन में लगे और प्रारंभ में काव्य की ओर झुकाव हुआ। 'अन्तर्जगत' नामक काव्य-कृति आप की प्रथम कृति है। परन्तु शीघ्र ही आप काव्य-सृजन से विमुख हो गए और आप की नाटकीय-प्रतिभा का विकास हुआ और शीघ्र ही आप प्रतिष्ठित नाटककार सिद्ध हुए। आप की प्रथम नाट्य-कृति 'अशोक' है।

आप ने अब तक अनेक एकांकियों और दो दर्जन के लगभग नाटकों का सृजन किया है। जिनमें प्रमुख हैं—सन्यासी, राक्षस का मंदिर, मुक्ति का रहस्य, राज योग, नारद की वीणा, बत्सराज, जगद्गुरु, चक्रव्यूह, सिन्दूर की होली, ग्राधी रात आदि।

'सेनापति कर्ण' नामक महाकाव्य की भी आप ने रचना की है।

डब्सन के नाटकों का भी आप ने हिन्दी में अनुवाद किया है। इड्मन और वर्नाडि शा का आप पर गहरा प्रभाव है।

भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम चित्रण आप के नाट्य-साहित्य की प्रमुख विशेषता है। आज भी आप की लेखनी सृजनशील है। •

लक्ष्मीनारायण
मिश्र



जन्म : सन १९०३

हिन्दी नाटक-साहित्य के भंडार को अनेक प्रसिद्ध कृतियों ने सजाने वाले पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र का आधुनिक नाटककारों में प्रमुख स्थान है।

मन १९०३ में आजमगढ़ जिले (उ० प्र०) के वस्ती नामक ग्राम में आप का जन्म हुआ।

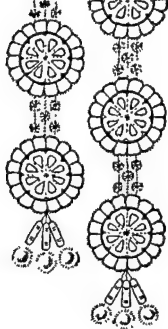
आप की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई तथा बाद में आप ने सेंट्रल हिन्दू कालेज, काशी से बी० ए० पान किया।

काशी में रहते हुए आप को काशी के साहित्यिक वातावरण में धुल-मिल जाने का पूरा अवसर मिला और तभी आप को साहित्य से अभिरुचि भी हुई। अठारह वर्ष की आयु से ही आप साहित्य-सृजन में लगे और प्रारंभ में काव्य की ओर झुकाव हुआ। 'अन्तर्जगत' नामक काव्य-कृति आप की प्रथम कृति है। परन्तु शीघ्र ही आप काव्य-सृजन से विमुख हो गए और आप की नाटकीय-प्रतिभा का विकास हुआ और शीघ्र ही आप प्रतिष्ठित नाटककार सिद्ध हुए। आप की प्रथम नाट्य-कृति 'अशोक' है।

आप ने अब तक अनेक एकांकियों और दो दर्जन के लगभग नाटकों का सृजन किया है। जिनमें प्रमुख है—सन्यासी, राक्षस का मंदिर, मुक्ति का रहस्य, राज योग, नारद की धोना, वत्सराज, जगद्गुरु, चक्रव्यूह, सिन्दूर की होली, आधी रात आदि।

'सेनापति कर्ण' नामक महाकाव्य की भी आप ने रचना की है। इन्सन के नाटकों का भी आप ने हिन्दी में अनुवाद किया है। इन्सन और बर्नाड शा का आप पर गहरा प्रभाव है।

भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम चित्रण आप के नाट्य-साहित्य की प्रमुख विशेषता है। आज भी आप की लेखनी सृजनशील है। •

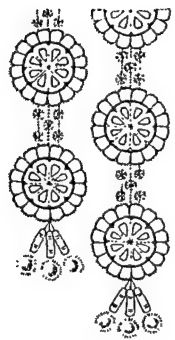


लक्ष्मीनारायण
मिश्र



जन्म : सन १८०३





भगवतीचरण वर्मा



प्रेमचंद के बाद के कथाकारों में श्री भगवतीचरण वर्मा का बड़ा महत्वपूर्ण और प्रमुख स्थान है। कुशल कवि, कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में आप समान रूप से प्रसिद्ध हैं।

आप का जन्म सन १९०३ में शफीपुर (उन्नाव, उ० प्र०) में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त करके आप ने बकालत भी पास की, लेकिन साहित्य के प्रति गहरी रूचि के कारण बकालत का पेशा कभी अपना न सके और सारा जीवन साहित्य-सेवा में ही लगे रहे।

आप का साहित्यिक जीवन एक कवि के रूप में प्रारंभ हुआ लेकिन कथाकार के रूप में आप अधिक प्रसिद्ध और सफल हुए। आप की प्रथम उपन्यासिक कृति 'चित्रलेखा' अपनी कथा-वस्तु, शिल्प, भाषा और प्रभावशाली चित्रण के कारण हिन्दी की प्रथम कोटि की अद्वितीय रचना सिद्ध हुई। बाद में आप ने अनेक उच्चकोटि के उपन्यासों की रचना की जिनमें तीन वर्ष, टेढ़े मेढ़े रास्ते, भूलें-बिसरे चित्र, रेखा, सीधी सच्ची बातें आदि प्रमुख हैं।

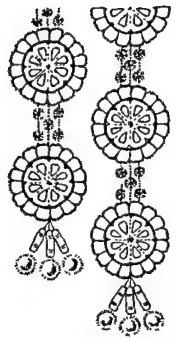
आप की कहानियाँ भी अपनी नवीनता तथा शिल्प के कारण बहुत प्रसिद्ध हुई हैं।

समाज के विभिन्न पहलुओं का चित्रण करते हुए बहुत तीखा और कटु व्यंग्य करना आप की शैली की विशेषता है।

प्रेमचन्द के बाद भगवतीचरण वर्मा ही हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार हैं। ●

जन्म : सन १९०३





सुभद्राकुमारी चौहान



हिन्दी की राष्ट्रीय चेतना की सम्मानित कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का नाम बहुत आदर और श्रद्धा से लिया जाता है। स्वतन्त्र्य-संग्राम-युग में आप की अमर काव्य रचना 'झाँसी की रानी' देश का कण्ठहार बन गई थी।

आप का जन्म सन १९०४ में इलाहाबाद में हुआ था। आपने प्रयाग में ही शिक्षा पायी और खण्डवा निवासी ठा० लक्ष्मण सिंह चौहान से विवाह होने के बाद आपका कार्यक्षेत्र जबलपुर (म० प्र०) रहा।

साहित्य सृजन के साथ-साथ राजनीति में भी सक्रिय भाग लेने वाली सुभद्रा जी मध्यप्रदेश विधान सभा की सदस्या भी रही है।

सुभद्रा जी की प्रसिद्धि मुख्यता एक महान और ओजस्विनी कवयित्री के रूप में ही अधिक है, परन्तु आपकी लिखी कहानियाँ भी अपनी कला, मार्मिकता और भावुकता के लिए कम प्रसिद्ध नहीं हैं। आप की कहानियों पर आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सेकसरिया पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

मुकुल, बिखरे मोती और उन्मादिनी आदि आप के प्रमुख ग्रंथ हैं।

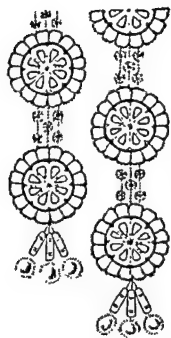
सन १९४८ में नागपुर से जबलपुर की यात्रा के समय मोटर दुर्घटना की आप शिकार हो गईं, यह हिन्दी का बड़ा दुर्भाग्यक्षण था। सुभद्रा जी को यदि लम्बी आयु मिली होती तो हिन्दी और राष्ट्र का बहुत कल्याण होता।

सुभद्रा जी जैसी महान व्यक्तित्व वाली तथा प्रतिभाशालिनी महिला दूसरी नहीं। ●

जन्म : सन १९०४

निधन : सन १९४८





भारत में सशस्त्र क्रांति के नायक 'यशपाल' का नाम एक जमाने में अंग्रेजी राज्य के लिए आतंक था। स्वतंत्र्य-संग्राम-युग में यशपाल के नाम से भारत का युवा-वर्ग प्रेरणा लेता था। वही यशपाल जब साहित्य-क्षेत्र में आए तो साहित्य-जगत में भी एक नई क्रांति का सूत्रपात हुआ।

आपका जन्म सन १९०४ में किरोजपुर (पंजाब) में हुआ था। शिक्षा, गुरुकुल काँगड़ी और नेशनल कालेज, लाहौर में हुई। विद्यार्थी जीवन में ही आपका सम्पर्क क्रान्तिकारी दल से हो गया और शीघ्र ही आप शहीद भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद के विश्वासपात्र सहयोगी बन गए। अंग्रेजी सरकार ने आप पर राजद्रोह का मुकदमा चलाकर आपको आजीवन कारावास का दण्ड दिया था। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद आप कारावास से मुक्त हो सके।

कारावास से छूट कर यशपाल ने लखनऊ से 'विप्लव' नामक उग्र विचारधारा के मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया।

यशपाल ने सैकड़ों कहानियाँ और दर्जनों उपन्यास लिखे हैं। यथार्थवादी परम्परा के आप प्रमुख लेखक हैं। आप की प्रमुख रचनाएँ हैं—दादा कामरेड, देशद्रोही, दिव्या, मनुष्य के रूप, ज्ञान-दान, भूठा-सच, अभिशप्त, धर्मयुद्ध और सिंहावलोकन आदि।

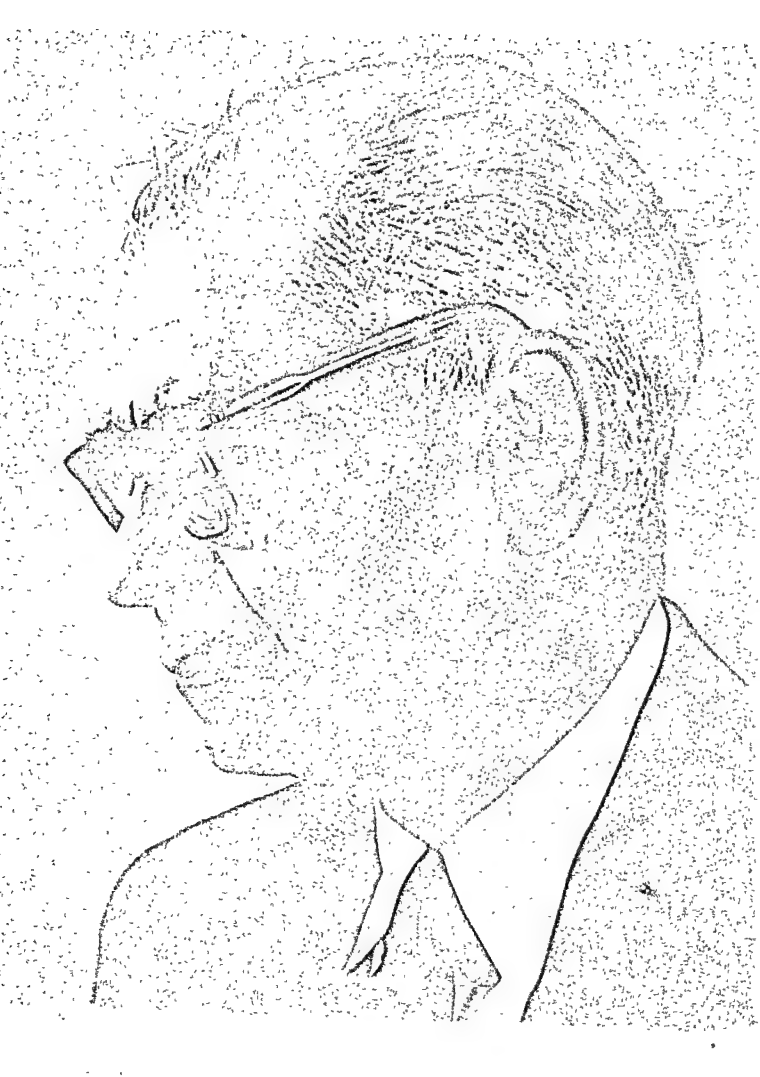
आप की कृतियों का हमी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है। 'भूठा-सच' आपका एक वृहत् आधुनिक युगीन इतिहास रूपी उपन्यास है जो आपकी अमर रचना है।

यह कहना अनुचित न होगा कि भविष्य में आज का हिन्दी कथा-युग 'यशपाल-युग' के नाम से ही पुकारा जाएगा। ●

यशपाल



लग्न : सन १९०४



प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कथा-साहित्य में जैनेन्द्र कुमार का ही नाम सब से महत्व का माना जाता है। प्रेमचन्द के युग के प्रतिनिधि कथाकार होने के साथ ही आप अपनी विशेषताओं के कारण किसी बाद या युग-विशेष से बँध नहीं सके।

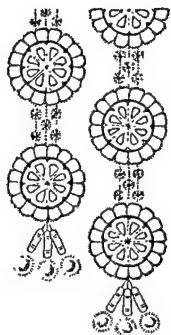
सन १९०५ में कांडिया गंज, जिला अलीगढ़ के एक मध्यवर्गीय परिवार में आप का जन्म हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा जैन गुरुकुल, हस्तिनापुर में हुई और मैट्रिक के पश्चात् दो वर्ष काशी विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के बाद असहयोग आन्दोलन में शामिल होकर पढ़ाई से विरक्त हो गए।

आप की पहली कहानी 'खेल' सन १९२८ में 'विशाल भारत' में छपी। तथा आप का प्रथम उपन्यास 'परख' भी लगभग इसी समय प्रकाशित हुआ था।

कई वर्षों तक आप प्रेमचन्द जी के साथ और उनके बाद अकेले भी 'हँस' का सम्पादन करते रहे।

आप ने अनेक कहानियों और दर्जनों उपन्यासों की रचना की है। आपकी प्रसिद्ध कृतियों के नाम हैं—परख, मुनीना, त्यागपत्र, सूखदा, जयवर्द्धन, जयसंधि, जड़ की बात, विवर्त, व्यतीत, ये और वे तथा ममय और हम आदि।

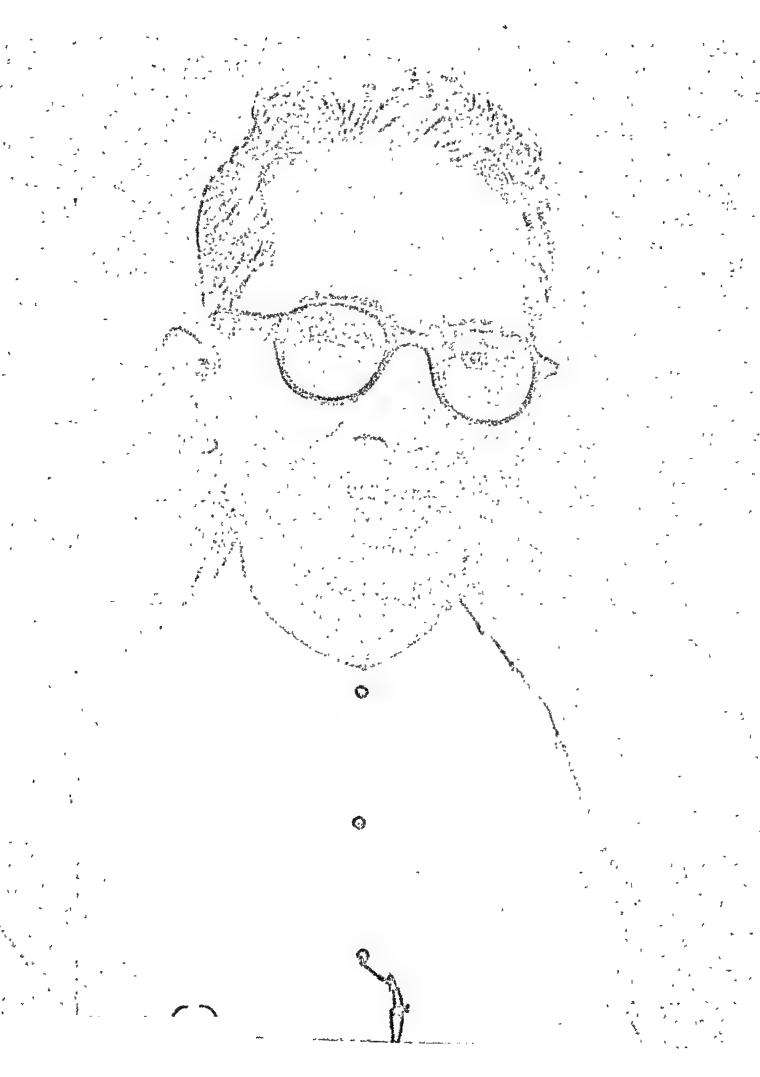
जैनेन्द्र कुमार का नाम हिन्दी कथा-क्षेत्र में ऐतिहासिक महत्व का है। •



जैनेन्द्र कुमार



जन्म : सन १९०५



हिन्दी में आधुनिक एकांकी के जनक डा० रामकुमार वर्मा बहुमुखी प्रतिभा के जागरूक कलाकार हैं। कवि नाटककार, साहित्य-इतिहासकार, आलोचक और अध्यापक के रूप में आप का मधेष्ट सम्माननीय स्थान है।

आपका जन्म सन १९०५ में मध्यप्रदेश के सागर जिले में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। आप की शिक्षा सागर और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। नागपुर विश्वविद्यालय से आप ने 'डाक्टरेट' ली। और सारा जीवन साहित्य रचना और अध्यापकी में लीन रहे।

वर्माजी को प्रारंभ से ही सांस्कृतिक व साहित्यिक वातावरण मिला था। आपने विद्यार्थी जीवन में ही 'कुमार' उपनाम से काव्य रचनाएँ प्रारंभ कर दी थीं। प्रारंभ में आप को अभिनय-कला से बहुत रुचि थी जो बाद में प्रख्यात नाटककार के रूप में प्रस्फुटित हुई।

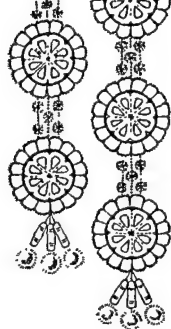
आप के एकांकियों की संख्या एक सौ लगभग है तथा नाटकों की संख्या दर्जनों में है। सन १९२२ से आप की रचनाएँ लगातार प्रकाशित होती आ रही हैं।

आपके प्रसिद्ध ग्रंथों में मे प्रमुख हैं—चित्ररेखा, साहित्य समा-लोचना, कवीर का रहस्यवाद, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, जीहर, रेशमी टार्ट, गिवाजी, रूपरंग, रिमकिम और मयूरपंख आदि।

डा० वर्मा प्रकृति से कवि हैं पर हिन्दी के इतिहास में नाटककार के रूप में आप का नाम अमर हो चुका है। आप अनेक वर्षों तक प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। आप की अध्यापकीय कुशलता के कारण रुस तथा लंका की सरकारों ने आपकी सेवाओं का उपभोग अपने-अपने देशों में हिन्दी अध्यापन के क्षेत्र में भी किया।

डा० वर्मा के नाटक रंगमंच पर खेले जाने योग्य होते हैं अतः आपके नाटकों का जनसाधारण में बहुत प्रचार हुआ है।

लगभग अर्द्धशताब्दी तक हिन्दी की सेवा में रत डा० रामकुमार वर्मा की लेखनी आज थकी नहीं बल्कि पहले से अधिक गतिमयता से सृजन में लगी है। ●

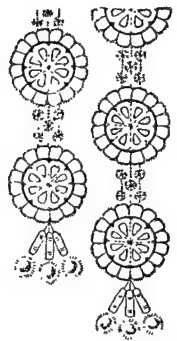


रामकुमार वर्मा



जन्म : सन १९०५





हिन्दी साहित्य में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के रिक्त स्थान की किसी हद तक पूर्ति करने में सफल आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की गणना श्रेष्ठतम आलोचकों में की जाती है।

आपका जन्म सन १९०६ में ग्राम मगरैल, जिला उन्नाव (उ० प्र०) में एक सम्मानित कुल में हुआ। आपकी उच्च शिक्षा काशी विश्वविद्यालय में हुई।

सन १९३२ में आप ने प्रयाग से प्रकाशित दैनिक 'भारत' का सम्पादन प्रारंभ किया। दो वर्ष बाद आप ने काशी नागरी प्रचारिणी मभा में 'सूर सागर' और गीता प्रेस, गोरखपुर में 'रामचरितमानस' का सम्पादन किया। सन १९४१ में आप काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हुए। फिर सन १९४७ में सागर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष हुए। बाद में आप विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के उपकुलपति हुए।

छायावाद के गम्भीर व्याख्याता, प्रख्यात आलोचक और निबंधकार आचार्य वाजपेयी जी के प्रमुख ग्रंथों के नाम हैं—हिन्दी साहित्य-बीसवीं शताब्दी, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द्र, आधुनिक साहित्य, कवि निराला आदि हैं।

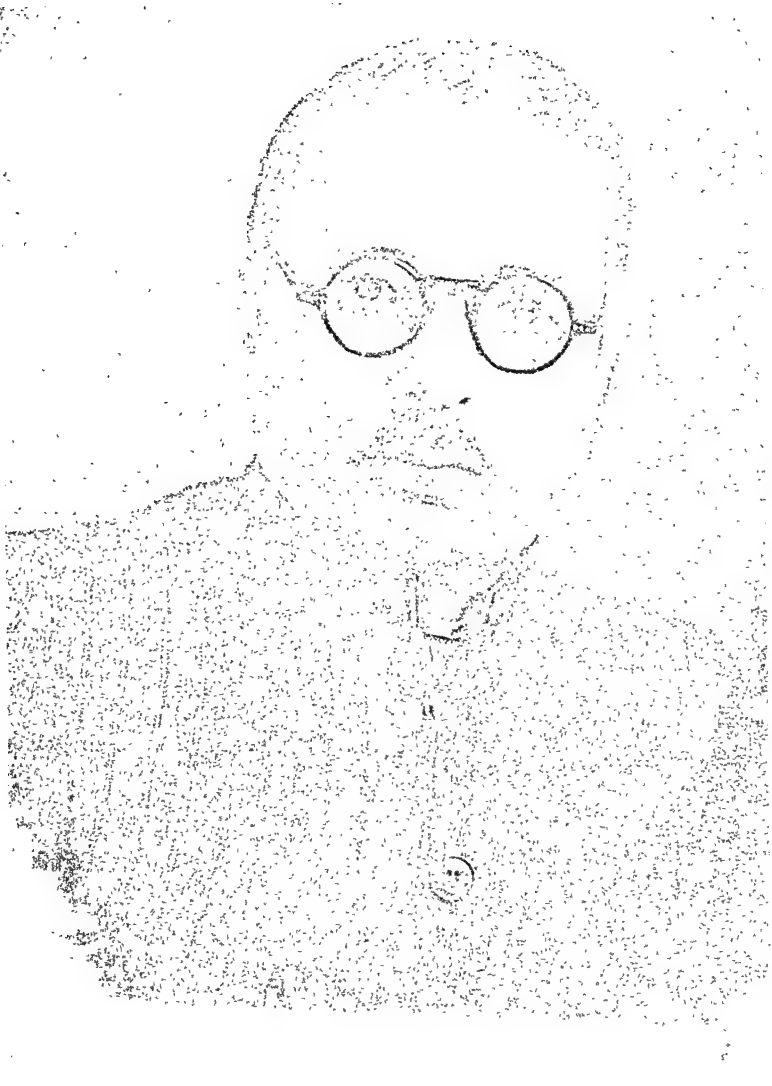
साहित्य सृजन के साथ जीवन के अनेक वर्ष वाजपेयी जी ने अध्यापन-कार्य में लगाया। यदि वाजपेयी जी केवल साहित्य-क्षेत्र तक अपने को सीमित रखते तो आज हिन्दी में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से बड़े पंडित और अलोचक तथा आचार्य का हम दर्शन पाते। फिर भी वाजपेयी जी हिन्दी को जितना दे गए हैं वही हिन्दी के लिए महान निधि है और उनसे प्रभाव ले कर हिन्दी के अनेकानेक साहित्य-आलोचक और विद्वान आपकी साहित्य-धारा को आगे बढ़ाने में व्यस्त हैं।

सन १९६७ में आप के देहांत में हिन्दी साहित्य ने एक आचार्य ही नहीं, हिन्दी के एक ऐसे विद्वान को खो दिया जिसकी कमी मभवतः कभी पूरी न हो सके। •

नन्ददुलारे वाजपेयी



जन्म : सन १९०६
निधन : सन १९६७



हिन्दी साहित्य में श्रीमती महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रेरणास्पद, प्रतिभाशाली और आकर्षक तथा गरिमामय है। गद्य और पद्य के लेखन में समान रूप से शीर्षस्थ स्थान पाने वाले रचनाकारों में महादेवी का नाम एकमात्र उदाहरण है।

महादेवी का गद्यकार महान है या उनका काव्यकार का रूप, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका किसी के पास समुचित उत्तर नहीं। महादेवी जी हिन्दी की गरिमा हैं, महान कवयित्री, महान गद्यकार।

आपका सन १९०७ में फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में जन्म हुआ तथा वहीं प्रारंभिक शिक्षा भी। बाद में इंदौर, भागलपुर और इलाहाबाद में। प्रयाग विश्वविद्यालय से बी० ए० तथा संस्कृत में एम० ए० करने के बाद महात्मागांधी की प्रेरणा से आप ली-शिक्षा के काम में लग गई और तभी से प्रसिद्ध नारी शिक्षा संस्था-प्रयाग महिला विद्यापीठ का सफलता पूर्वक संचालन कर रही हैं।

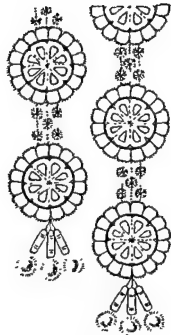
विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और महात्मा गांधी से प्रेरणा लेकर सारा जीवन आप ने समाज, देश व साहित्य की श्री वृद्धि में ही अर्पित कर दिया।

आप श्रेष्ठ चित्रकार भी हैं।

आज महादेवी जी का स्थान छायावाद की प्रमुखतम कवयित्री के रूप में अमर हो चुका है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिक्षा, संकल्पिता, क्षणदा, स्मृति की रेखाएँ और अतीत के चलचित्र तथा पथ के साथी आदि आप के प्रमुख ग्रंथ हैं। 'महादेवी साहित्य' नाम से आप की समस्त रचनाओं का संग्रह भी कई भागों में प्रकाशित हुआ है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'मंगला प्रसाद परितोषिक', नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा 'विद्यावाचस्पति', उज्जैन विश्वविद्यालय द्वारा 'डॉक्टरेट तथा भारत सरकार द्वारा 'पद्मभूषण' की उपाधि द्वारा आप को सम्मानित किया गया है।

महादेवी जी हिन्दी की एक ऐसी ज्योति और अनमोल प्रतिभा हैं जिनकी तुलना में विश्व की किसी भी नारी का नाम नहीं लिया जा सकता। ●



महादेवी वर्मा



जन्म : सन १९०७



आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की गणना हिन्दी के शीर्षस्थानीय विद्वानों में होती है। आप का सदा प्रसन्न और उत्साही व्यक्तित्व आधुनिक युग के लेखकों के लिए प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हुआ है। आप उदार आलोचक मानवतावादी निबन्धकार तथा दर्शन, धर्म और संस्कृत के महान विद्वान हैं।

आप का जन्म सन १९०७ में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के दुवेका छपरा नामक ग्राम में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण-कुल में हुआ था। आप को ज्योतिष और संस्कृत का ज्ञान विरासत में मिला। आप ने सन १९३० में काशी विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य और इन्टर की परीक्षा पास की। उन्नीस वर्ष हिन्दी प्राध्यापक के रूप में आप शांति-निकेतन चले गए। वहाँ १९४० से १९५० तक हिन्दी भवन के आचार्य पद पर रहे। वहीं आप रवीन्द्र नाथ ठाकुर के निकट सम्पर्क में आए। शांति निकेतन के उच्च सांस्कृतिक वातावरण में ही वास्तव में आप के साहित्य-जीवन का निर्माण हुआ। शांति निकेतन के बाद सन १९५० के पश्चात् आप काशी विश्व-विद्यालय, तथा पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रहे।

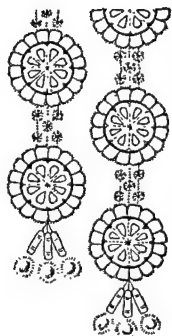
आप ने ललित निबन्ध, उपन्यास और समालोचनाएँ लिखी हैं। आप के प्रमुख ग्रंथ हैं—हिन्दी साहित्य की भूमिका, कबीर, हिन्दी साहित्य का आदि काल, वाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्र लेख, अशोक के फूल, कुटज, नाथ सम्प्रदाय और कल्पलता आदि।

हिन्दी, संस्कृत के अलावा आप बंगला साहित्य के भी मर्मज्ञ विद्वान हैं। आप अनेक वर्षों तक नागरी प्रचारिणी पत्रिका के सम्पादक रहे।

आप की साहित्य सेवाओं के लिए भारत सरकार ने सन १९५७ में आप को 'पद्म भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया।

साहित्य के लगभग सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा और विशिष्ट कर्तृत्व के कारण विशेष यश के आप भागी हैं। आप की भाषण-कला भी अद्वितीय है।

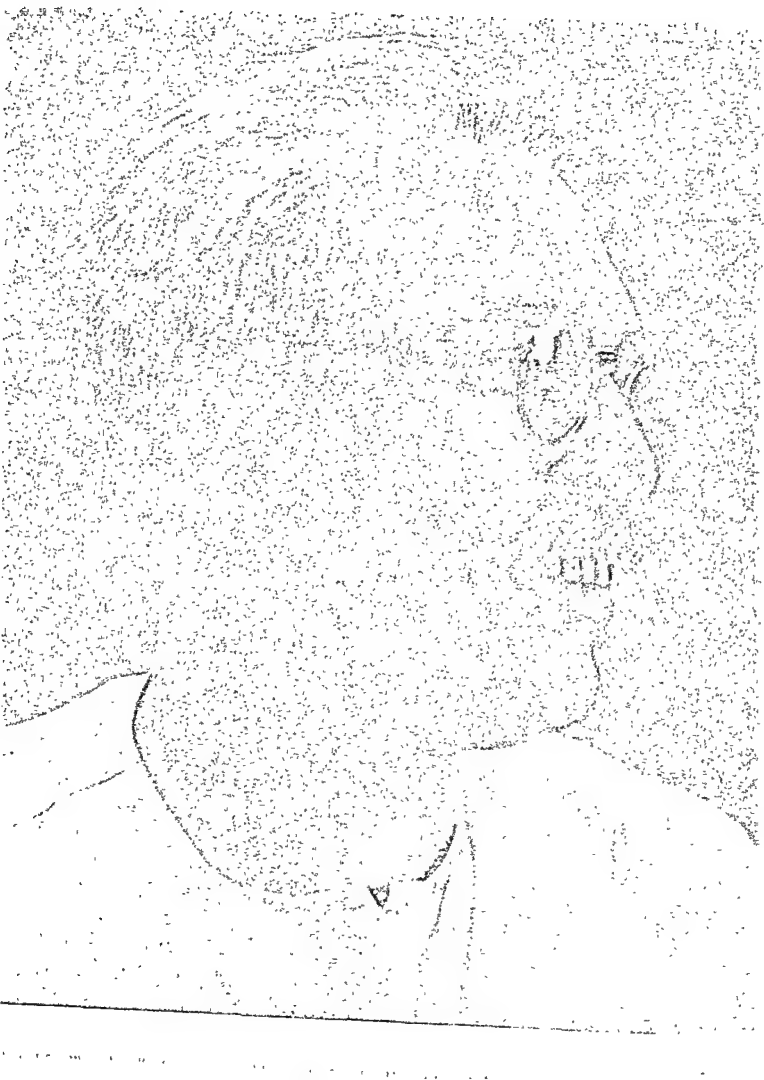
आप का रमय व्यक्तित्व हिन्दी की निधि है। •



हजारीप्रसाद
द्विवेदी



जन्म : सन १९०७



‘दिनकर’ नाम हिन्दी में भोज, तेजस्विता, राष्ट्रीयता और प्रगति का प्रतीक बन गया है। खूब आकर्षक भोजमय व्यक्तित्व और भोजस्वी वाणी के धनी रामधारी सिंह ‘दिनकर’ राष्ट्रीय युगधर्म के चारण हैं।

आप का सन १९०८ में सिमरिया, जिला मुंगेर (बिहार) में जन्म हुआ। आप ने पटना विश्वविद्यालय से बी० ए० पास किया। कुछ वर्षों सरकारी नौकरी और अध्यापकी के बाद राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और बाद में भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार के पद पर रहे। आप को साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा ‘पद्म भूषण’ की उपाधि मिल चुकी है।

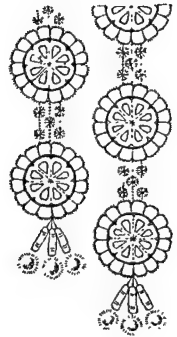
आप मुख्यरूप से महाकवि हैं पर गद्य भी आप ने काफी लिखा। आप की प्रमुख काव्य कृतियों के नाम हैं—रेणुका, हुकार, रसवन्ती, कुक्षेत्र, उर्वशी, सामधेनी, परशुराम की प्रतीक्षा, अद्वन्द्वारीश्वर, संस्कृति के चार आध्याय, लोकदेव नेहरू आदि।

दिनकर जी ने अनेक बार विदेशों का भ्रमण किया और विदेशों में हिन्दी का सम्मान बढ़ाया।

आप का व्यक्तित्व बहुत विशाल, आकर्षक और प्रेरणास्पद है।

दिनकर जी आधुनिक युग के भारतीय सस्कृति के सशक्त आख्याता और युग प्रवर्तक कवि हैं।

दिनकर जी की कृतियों से हिन्दी का भोजपूर्ण निखार संभव हुआ है। ●



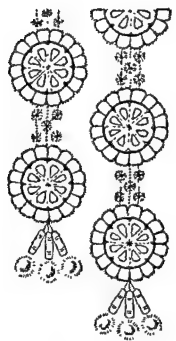
रामधारी सिंह
‘दिनकर’



जन्म : सन १९०८



100



श्री उपेन्द्रनाथ 'अशक' आधुनिक युग के अत्यधिक चर्चित लेखक है। आपका व्यक्तित्व जितना अनोखा और रंगीन है, आपकी लेखनी भी उतनी ही अनोखी और रंगीन है।

उपन्यासकार, नाटककार, कवि, आलोचक और कहानीकार अशक जी बहुमुखी प्रतिभा के तथा प्रखर व पेनी लेखनी के मालिक हैं।

आप का जन्म सन १९१० में जालंधर (पंजाब) में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा आप की वहीं हुई और कालात आपने लाहौर में पास की। लेकिन साहित्यानुरागी होने के कारण कालात को कभी पेशा न बनाकर पत्र-कारिता और साहित्य सेवा के माध्यम में ही जीवन यापन करते रहे।

पत्रकारिता, सिने-अभिनय, अध्यापन, प्रकाशन आदि विभिन्न क्षेत्रों में जीवन के अनेकानेक वर्ष बिता कर अब आप स्थायी रूप से प्रयाग में जम कर साहित्य-सृजन में व्यस्त रहते हैं।

अशक जी जितने बड़े कथाकार हैं, उतने ही बड़े नाटककार और उतने ही महान उपन्यासकार भी।

प्रारंभ में अशक जी ने उर्दू में लिखना शुरू किया और उर्दू साहित्य में यथेष्ट यशोपाजन के बाद हिन्दी में लिखने लगे और देखते ही देखते आपका हिन्दी कथा-साहित्य में शीर्षस्थ स्थान बन गया।

अब तक आप की पचास के लगभग पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 'गिरती दीवारें' नामक आपका बृहत् उपन्यास अपने युग के प्रतिनिधि-कृति का सम्मान पा चुका है।

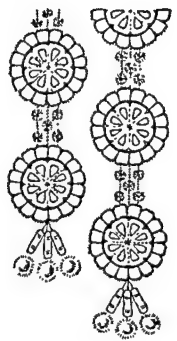
अशक जी के प्रमुख ग्रंथों के नाम हैं—गिरती दीवारें, सितागों के खेल, गर्म राख, शहर में घूमता आइना, चरवाहे, छठा बेटा, जय पराजय आदि।

अशक जी का व्यक्तित्व हिन्दी के नवोदित लेखकों के लिए सदा प्रेरणा ग्राह्य है। •

उपेन्द्रनाथ
'अशक'



जन्म : सन १९१०



बहुमुखी और अज्ञेय प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी अज्ञेय जी का पूरा नाम है—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन । अज्ञेय उप-नाम ही नहीं, आपका व्यक्तित्व भी वैसा ही अज्ञेय है ।

आप का जन्म सन १९११ में कसिया, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ । आपकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई । फिर मद्रास और लाहौर में विज्ञान की उच्च-शिक्षा प्राप्त की, परन्तु साहित्य-क्षेत्र में ही सदा रमे रहे ।

अपनी तरुणार्ध में कई वर्ष क्रान्तिकारी आन्दोलन में भी लगाए और कुछ वर्ष जेल में भी बिताए । जेल-प्रवास-काल से ही साहित्य-मृजन प्रारंभ किया ।

अज्ञेय जी बहुमुखी प्रतिभा के सशक्त कलाकार हैं । कहानी, उपन्यास, कविता और निबन्ध—सभी विद्याओं में नई दिशा का निर्माण किया । आपने यात्रा वृत्तंत भी बहुत रोचक लिखे हैं । सम्पादन-क्षेत्र में भी घमण्ट यश कमाया । सैनिक, विशाल भारत प्रतीक, दिनमान, जैसे पत्र-पत्रिकाओं के सफल सम्पादक रहे हैं ।

अज्ञेय जी का प्रसिद्ध जीवन-चरित-मूलक उपन्यास—‘शेखर एक जीवनी’ आधुनिक युग की सर्वश्रेष्ठ उपन्यासिक कृति है ।

आप के अन्य ग्रन्थों के नाम हैं—विषयगा, कोठरी की बात, नदी के द्वीप, जयदोल, शरणार्थी और ये तेरे प्रतिरूप आदि ।

साहित्य के अतिरिक्त चित्रकला, मूर्तिकला, पुरातत्व विज्ञान और भ्रमण में आपकी विशेष रुचि रही है । आपने योरप तथा अमेरिका की कई बार यात्रा की है ।

अंग्रेजी साहित्य के भी आप मर्मज्ञ विद्वान हैं और भारतीय साहित्य की कई कृतियाँ अंग्रेजी में अनूदित करके आपने विदेशों में भारतीय साहित्य का सम्मान बढ़ाया है । •

अज्ञेय



जन्म : सन १९११



स्वभाव से मस्त-मोला, अति फक्कड़ और लुभावने व्यक्तित्व वाले अमृतलाल नागर की मही भाँकी उनकी रचनाओं में आसानी से खोजी जा सकती है।

लखनऊ की नज़ाकत और नफ़ामत को साहित्य में ढालने में नागर जी ने अद्वितीय सफलता पायी है।

सन १९१६ में आपका जन्म आगरा में हुआ लेकिन लगभग समस्त जीवन आप लखनऊ निवासी होकर ही रहे। अल्पवय से ही साहित्यिक लेखन प्रारम्भ कर दिया, इसीलिए पढ़ाई नियमित न चल सकी।

सन १९३५ में 'वाटिका' कथा-संग्रह लेकर आप साहित्य-क्षेत्र में आए। हास्य-व्यंग्य की चाहन्ती मिली आपकी शैली अद्वितीय और नितान्त निराली है।

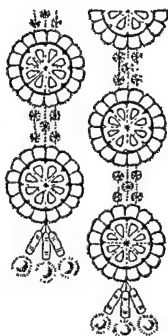
महान बंगाली उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के निकट सम्पर्क में रहे और उनसे काफी प्रभावित भी रहे।

सन १९३६ में 'चकल्लस' नामक हास्य-पत्रिका का प्रकाशन किया। बाद में बम्बई व सिनेमा-जगत में भी रहे और इस बीच, 'राजा', 'कुंवाराप्पाय', 'वीरकुणाल', 'मीरा' और 'कल्पना' जैसी प्रसिद्ध फिल्मों के संवाद लिखे और अभिनय भी किया।

आप ने कई उपन्यास और अनेकानेक कहानियाँ लिखी हैं। बूंद और समुद्र, अमृत और विष, ये कोटेवालिनी, एकदा नैमिषारण्ये आप के बड़े उपन्यास हैं जिन्हें आधुनिक युग की महान कृतियाँ माना गया है। बंगाल के अकाल के समय उगी पृष्ठभूमि पर आपकी कथा-कृति 'महाकाल' एक युग-प्रवर्तक कृति मानी गई।

आपकी रचनाएँ बंगाली, मराठी, गुजराती तथा रूसी आदि विदेशी भाषाओं में भी अनुदित हो चुकी हैं।

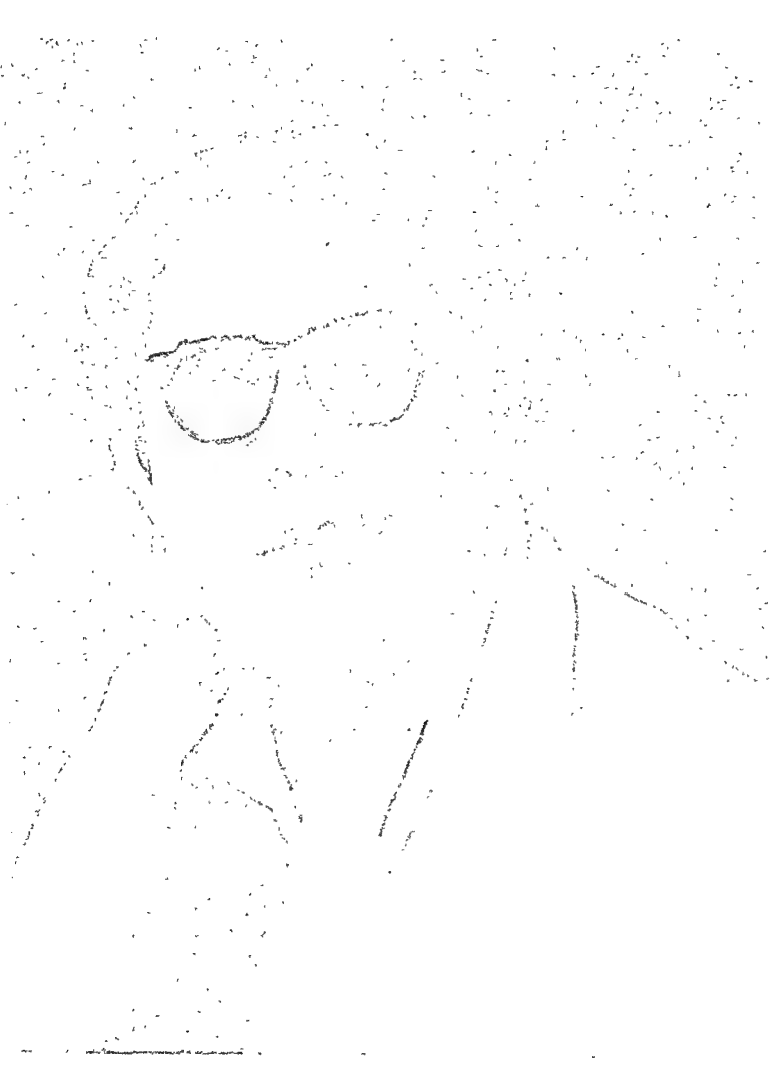
आप आज के युग के प्रतिनिधि लेखक हैं। •

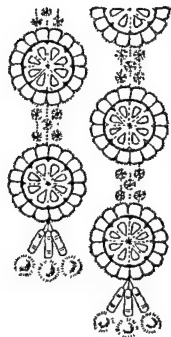


अमृतलाल नागर



जन्म : सन १९१६





आज की हिन्दी लेखिकाओं में श्रीमती रजनी पनिकर का निर्भीक और ओजपूर्ण लेखन के कारण विशिष्ट स्थान बन चुका है। वर्तमान युग की बदलती नारी का चित्रण तथा नारी-मनोविज्ञान का विश्लेषण करने में आप की रचनाएँ अद्वितीय हैं। समाज की सड़ी-गली रूढ़ियों को तोड़ कर उभरने वाली नई नारी का चित्र आप की कलम से सजीव हो उठा है।

लाहौर में सन १९२४ में जन्म लेकर वहीं ने अंग्रेजी व हिन्दी में एम० ए० किया। अल्पायु से ही लिखने की रुचि हो गई थी। अतः बहुत प्रारंभ से ही आप की रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं। यों सन १९५४ से नियमित रूप से लेखन कार्य चल रहा है और अनेक सशक्त कथा-कृतियों की रचना करके आपने हिन्दी का गौरव बढ़ाया है।

पञ्जाब सरकार द्वारा प्रकाशित 'प्रदीप' का सम्पादन काफी दिनों किया। फिर आकाशवाणी से सम्बद्ध लखनऊ, कलकत्ता, दिल्ली, जयपुर आदि केन्द्रों में रह कर हिन्दी साहित्य को अपनी अमूल्य कृतियों से सजाती जा रही है।

आप ने कहानियाँ काफी संख्या में लिखी हैं। कहानियों के अलावा लगभग एक दर्जन उपन्यासों की भी रचना आपने की है जो हिन्दी संसार में बहुत चर्चित और प्रसिद्ध हुए हैं।

आप की प्रमुख कृतियों के नाम हैं—पानी की दीवार, मोम के मोती, प्यासे बादल, काली लडकी, जाड़े की धूप, महानगर की मीना, सोनाली दी और सिगरेट के टुकड़े आदि।

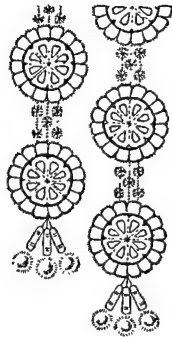
आपकी कई रचनाएँ उत्तर प्रदेश सरकार, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय और यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत होने का सम्मान पा चुकी हैं। •

रजनी पनिकर



जन्म : सन १९२४





ओंकार शरद



हिन्दी साहित्यकारों की वर्तमान पीढ़ी में श्री ओंकार शरद का व्यक्तित्व ओज, विद्रोह और कर्मठता का प्रतीक बन गया है।

अवस्था में जवानों की उतार है किन्तु मुख पर सदा शैशव की मुस्कान खेलती रहती है। है तो साहित्यकार किन्तु कभी-कभी राजनीति के अखाड़े में भी रम जाते हैं। तबियत में रङ्गीनी, काव्य-व्यापार में रङ्गीनी, साहित्य सर्जन में रङ्गीनी, लेकिन स्वभाव में अभिजात शोल, व्यवहार में नम्र को बिनम्र बना देने वाली बिनम्रता।

सन १९२६ में मिर्जापुर (उ० प्र०) में एक निर्धन वैश्य परिवार में जन्म। लेकिन सदा इलाहाबाद में रह कर साहित्य सेवा में व्यस्त रहे। सन १९४२ में सोलह वर्ष की आयु में ही राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गए और लम्बी अवधि तक कारावास में रहे। शिक्षा अधूरी रह गई। जेल-वास में ही लिखना प्रारम्भ किया। सन १९४४ में पहली रचना प्रकाश में आई।

लहर, नौक-भोक, संगम, कादम्बिनी आदि पत्रिकाओं के सम्पादकीय से भी आप सम्बद्ध रहे हैं।

अब तक आधे दर्जन उपन्यासों, लगभग एक सौ कहानियों, शब्द चित्रों व रेखाचित्रों की रचना कर चुके हैं। आप की प्रसिद्ध कृतियों के नाम हैं—लंका महाराजिन, दादा, खूँ साहब, नातारिश्ता, अतिम बेला आदि। आप की लिखी डा० राममनोहर लोहिया की जीवनी आप की अत्यन्त लोकप्रिय रचना सिद्ध हुई है जिसके हिन्दी में कई संस्करण हो चुके हैं और ग्रंथजो, बंगला तथा उर्दू में अनूदित भी हो चुकी है।

साहित्य में निराला और राजनीति में लोहिया से अत्यधिक प्रभावित आप का व्यक्तित्व साहित्य और राजनीति का मिलन-बिन्दु है। ●

(अ० प्र० वि०)

जन्म : सन १९२६



